

MAITHILI

भवप्रीतानन्द पदावली

(भूमर-संगीत)

Maui
891-431 (Maui)

रचयिता
सदुपाध्याय

OJH

श्री श्री भवप्रीतानन्द ओझा

Maui
891-431 (Maui)
OJH (वैद्यनाथ मन्दिर के मठाधीश)

Maui
C9

30877



मूल्य रु० १२५ पैसे

ग्रन्थालय
पुस्तक एवं पुस्तक विक्रय
भारत

सर्वाधिकारी:—

श्री श्री भवप्रीतानन्द ओझा

प्रथम संस्करण

५००० प्रतियाँ

१६ सितम्बर १९६८



मुद्रक—

वि. कुर्ईक प्रेस,
बैद्यनाथ देवघर (बिहार)

(१)

भूमिका

सदुपाध्याय श्रीश्री भवप्रीतानन्द ओझा

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

गंगा के सदृश मानव-जीवन भी परिस्थिति के विशाल खण्डों से अनवरत टकराता, गिरता और सठता चलता है और अंत में विराट जीवन-पुंज में समाहित हो जाता है। परिस्थिति-जनित संघर्ष से जीवन में जो रूप-परिवर्तन होते हैं, वे ही व्यक्ति विशेष के 'व्यक्तित्व' को संभारते और निखारते हैं, वेही पुंजीभूत होकर 'प्रतिभा' का निर्माण करते हैं जो सुहावनी भी हो सकती है और भयावनी भी। सदुपाध्याय भवप्रीतानन्द जी ने आज अपने ८२ वर्ष के जीवन में जिस 'व्यक्तित्व' एवं 'प्रतिभा' का निर्माण किया है वह सर्वथा आकर्षक है, तभी तो जीवन-पथ के राहगीरों की दृष्टि इस पर बरबस पड़ती रही है और शक्तियों तक पड़ती रहेगी। वास्तव में उनका जीवन एक ऐसा संगम-स्थल है जहाँ प्रतिभा, भक्ति और कर्मठता की दिव्य त्रिवेणी का उदय होता है जिसके अजस्र पावन प्रवाह में न जाने कितने अवगाहन करके 'पुण्य' प्राप्त कर चुके हैं और प्राप्त करते रहेगे।

समन्वय, सरलता, सहृदयता, सौम्यता एवं काव्य-प्रतिभा के प्रतिमूर्ति सदुपाध्याय जी यूग युग तक मानव-समाज के लिए प्रेरणा के स्रोत, आदर्श-स्थंभ तथा अध्ययन-मनन के विषय

बने रहेंगे। स्वयं शैलिक सपाधियों से वंचित रहते हुए भी आज वे बड़े-बड़े एम० ए०, डी० लिट० के अध्ययन के विषय हो रहे हैं, गुफा कन्दराओं में न जाकर भी आज वे भक्त-शिरोमणि माने जाते हैं, राजा-महाराजा न होते हुए भी आज वे राज-योग के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। अपने ८२ वर्ष के इस दिव्य जीवन का निर्माण इन्होंने स्वयं किया है। इसके क्रमिक विकास में उनकी स्वभावगत दृढ़ता, विनम्रता, कर्तव्यपरायणता, सहृदयता आदि गुणों का विशेष योग रहा है। भगवत्कृपा तो इस महान् भक्त कवि को अपलब्ध है ही।

प्रादुर्भाव एवं शैशव

गौर वर्ण, मझौला कद, छोटे-छोटे सुफेद बाल, त्रिपुण्ड्र-मंडित विशाल ललाट, मस्तक घीषा, भुजा आदि में रुद्राक्ष तथा रत्नों की मालाएँ, यंत्र एवं ताबीज, स्वच्छ परिधान, पाधों में खराऊँ, समस्त मुखमण्डल पर सात्विक भाव एवं तेज, मृदु एवं स्वल्प भाषण, प्रभावोत्पादक प्राचीन ऋषि-मुलभ व्यक्तित्व, सदुपाध्याय भवप्रीतानन्दजी का जन्म वैद्यनाथधाम के निकट कुण्डा ग्राम में सरदार पण्डा के घर आश्विन कृष्ण नवमी बुधवार को संवत् १६४३ अर्थात् सन् १८८६ में हुआ। तत्कालीन सरदार पण्डा शैलजानन्द जी ने ज्येष्ठ पौष के जन्म के अवसर पर काफ़ी खुशियाँ मनाईं—अन्न-वस्त्र, धन-द्रव्य दान दिए। कहा जाता है कि जन्म के दिन ही सादुपाध्याय जी की जिह्वा पर “वाणी बीज मंत्र” अंकित कर दिया गया। हो

सकता है, उसी के परिणाम स्वरूप आज उनकी वाणी इस अंचल के शत-शत कंठों से सुखरित हो रही है। इनके पिता का नाम त्रिपुरानन्द एवं माता का नाम नूना मैया था।

प्राचुर्य के बीच प्रारंभ जीवन के उपयुक्त सदुपाध्याय जी की शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था की गई। उनके दादा शैलजानन्द जी एवं दादी सुमित्रा देवी का समस्त ध्यान इस होनहार बच्चे के शरीर एवं मन के समुचित विकास की दिशा में केन्द्रित रहने लगा। योग्य शिक्षक-अध्यापक रखे गए। अभी बालक भवप्रीता तीसरे वर्ग में प्रविष्ट ही हुआ था कि स्कूली शिक्षा को पारिवारिक अन्तर्विरोध एवं वैमनस्य के कारण सदा के लिए बन्द कर देना पड़ा।

छठी की रात के बाद से ही सदुपाध्याय जी का छाछन-पाछन का समस्त दायित्व उनकी पितामही ने अपने ऊपर ले लिया था। बचपन से ही सदुपाध्याय जी अपनी दादी से देवी-देवताओं की पौराणिक कथाएँ, धार्मिक पर्व-त्यौहारों के महत्व आदि के संबन्ध में किस्सा-कहानी सुनते रहे जो आगे चलकर इस महान् व्यक्तित्व के लिए नींव के पत्थर सिद्ध हुए।

पारिवारिक अन्तर्विरोध एवं वैमनस्य का क्रम इस गति से चलता रहा कि अभी किशोरावस्था समाप्त भी नहीं हो पाई थी और भवप्रीतानन्द जीवन के गहनतम अन्धकार के सम्मुख किर्कत्त व्यविमूढ़ होकर कालचक्र की प्रतीक्षा में असहाय आ खड़े हुए। पिता तो बचपन में ही चलबसे थे। दुलार-प्यार की एकमात्र स्रोत उनकी पितामही श्रीमती सुमित्रा देवी जी भी

इन्हें असहाय्यवस्था में छोड़ कर चल बसी। कहते हैं, 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'। इनकी दादी को अटूट विश्वास था कि बालक भवप्रीतानन्द एक दिन सरदार पण्डा की गद्दी पर अवश्य बैठेगा और दुनिया में नाम करेगा। इसी विश्वास के चलते सुमित्रा जी ने मरते समय उन्हें स्पष्ट शब्दों में वारण किया, "मेरे मरने पर तुम मुख्वाग्नि नहीं करना जानते नहीं, तुम्हें सरदार पण्डा बनना है, दुनिया में नाम करना है और इस गद्दी के अधिकारी को किसी की मुख्वाग्नि नहीं करनी चाहिए।" इनके पितामह शैलजानन्द जी यद्यपि जीवित थे किन्तु सरदार पण्डा की गद्दी से हट गये थे और अपने ज्येष्ठ पौत्र की विपिन्नावस्था के दर्शक मात्र बने रहे।

रामपुर ग्राम वास

सोना आग में तपकर चमकता है और मनुष्य गतिरोध की भट्टी में। युवक भवप्रीता ने जीवन के गतिरोध का सामना बड़ी ही दृढ़ता, बुद्धिमत्ता आत्म-विश्वास, मर्यादा एवं कर्मठता के साथ करना शुरू किया। दैन्य, नैराश्य एवं दौर्दल्य का कहीं नाम नहीं। जीविका के समुचित साधन के अभाव में देवघर में रहना असंभव हो गया। यजमानिका वे कर नहीं सकते थे। मर्यादा के प्रतिकूल होता। शैक्षिक योग्यता भी नहीं थी कि कहीं भीकरी करते। ऐसी स्थिति में अपनी एकमात्र सम्पत्ति एक मकान को दो हजार रुपये में बेचकर निकट के रामपुर ग्राम में मिट्टी-फूस की घर बनाकर आप-खाँकों के बीच रहने लगे।

कहा गया है, 'जहाँ राज कर चुके हों, वहाँ रंक बनकर रहना उचित नहीं।' सद्गुपाध्याय जी के इस निर्णय में कितना आत्म-विश्वास छिपा हुआ है, सोचा जा सकता है। कुल २० वर्ष की वयस में ही वे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती नन्द दुलारी देवी के साथ रामपुर जाकर रहने लगे। ग्रामवास में जो भी वृत्तियाँ हों, नगर के दूषित वातावरण, शोर-गुल आदि से दूर भारत के गाँव ईश्वर-चिंतन एवं आत्म-प्रसारण, के लिये आज भी स्वस्थ तथा शान्त वातावरण प्रस्तुत करते हैं। भगवत्-भजन, अध्ययन, चिन्तन, मनन, ग्राम-वासियों के सुख-दुःख में हाथ बंटाने आदि में ही सद्गुपाध्याय जी का समय बीतता रहा। जीवन-विकास के आवश्यक तत्वों के संबंध में कवि रवीन्द्र ने लिखा है, "पढ़ो कम सोचो अधिक, बोलो कम सुनो अधिक।" रामपुर वास से सद्गुपाध्याय जी में ये तत्व अनायास ही आ गए। किन्तु ग्राम हो या नगर आज के युग में अर्थ का सर्वत्र समान आधिपत्य है। आखिर २००० घटते-घटते २० रुपये की छोटी राशि पर उतर आए और सद्गुपाध्याय जी की अर्थ-विषयक चिन्ता बढ़ती बढ़ती अधिकार पूर्ण भविष्य के रूप में चारों ओर फैल गई। आगे कैसे चलेगा? यही चिन्ता उनके कोमल हृदय को सब समय आच्छादित किए रहती थी। ऐसी स्थिति में उनकी धर्मपत्नी ने एक रात को सपना सुना कि माँ दुर्गा स्वयं प्रकट होकर कह रही हैं, "तुम्हारे पास जो बीस रुपये बच रहे हैं, वह मुझे दे दो। इसीसे तेरा कल्याण होगा।" सद्गुपाध्याय जी को जब सपने की जानकारी हुई तो उन्होंने माँ दुर्गा की पूजा-

अर्चना में बीसों रुपये खर्च कर दिए। भय किसका ? धैर्य और भगवत्कृपा का अवलंबन लिए वे सर्वहारा होकर भी अपने को महान् समझते रहे। जीवट और आत्माभिमान का उदाहरण इससे अच्छा बिरले मिले।

कवि भवप्रीतानन्द

यों तो किशोरावस्था से ही भवप्रीतानन्द की ईश्वर प्रदत्त काव्य-प्रतिभा छोटे छोटे भक्तिपरक गीतों के रूप में यदा-कदा अभिव्यक्ति पाती रही, किन्तु रामपुर के एकान्त जीवन में इन्हें भूमर, घैरा, पाला आदि गेय पदों की रचना करने का विशेष अवसर मिला। इसके प्रयोजन एवं उपादेयता के विषय में कवि ने स्वयं अपनी "बृहत् भूमर रस मञ्जरी" (चतुर्थ संस्करण सन् १३४० साल) की भूमिका में लिखा है, 'संताल परगने में भूमर सर्वाधिक प्रचलित है। यहां के आदिवासियों की धारणा है कि नन्द-नन्दन श्री मधुसूदन गोकुल नगर में रहते समय राधा के प्रेम में विभोर होकर नील-सलिला उर्मिमाला मण्डिता यमुना के चारु श्यामल तट पर बंशी-ध्वनि के साथ राधा की प्रणय-गीति को भूमर छन्द में व्यक्त करते थे। अभी भी यहां के घाटवालों (जमीन्दारों) यहां कार्तिक पूर्णिमा के दिन काफी पैसे खर्च करके 'रासोत्सव' मनाया जाता है। किन्तु बड़े ही दुःख का विषय है, इस ओर आज तक किसी को दिलचस्पी लेते नहीं देखा। इसीसे अपनी अयोग्यता को जानते हुए भी मैंने इस अभाव को दूर करने का प्रयास किया है और

मेरी आशा है कि सहृदय पाठक (स्रोता) मेरी त्रुटियों या अपूर्णताओं को सहानुभूति की दृष्टि से देखकर मुझे कृतार्थ करेंगे। घाटवालों यहां आयोजित "रासोत्सव" के अवसर पर हजार-हजार की संख्या में एकत्र होकर इस अंचल की जनता भूमर, घैरा, पाला आदि के गतिपूर्ण गायनों का रसास्वादन करती थी। किन्तु सदुपाध्याय जी की रचनाओं के पूर्व बंगला के पुराने भूमर, घैरा आदि से वह ऊब उठी थी और नवीनता चाहती थी। उल्लेखनीय है कि आज से साठ-सत्तर वर्ष पूर्व इस अंचल के संभ्रान्त परिवार में बंगला का काफी प्रचार था और स्कूलों में शिक्षा का माध्यम भी बंगला ही था। सदुपाध्याय जी बंगला के सशक्त जानकार एवं कवि के रूप में आगे आये।

सदुपाध्याय जी बंगला के महान् कवि माइकल मधुसूदन को अपना आदर्श-कवि मानते हैं और उनकी अमर कृति "मेघनाद वध" को सर्वाधिक प्रिय काव्य-ग्रन्थ। बंगला के कवि भरतचन्द्र तथा उनकी कृति "विद्या सुन्दर" भी इन्हें बहुत पसन्द हैं। किन्तु इस जन-कवि को समझने में देर न लगी कि बंगला की रचनाएं इस अंचल के संभ्रान्त परिवार एवं पढ़े-लिखे लोगों को छोड़ साधारण जनता को बहुत कम आनन्द दे पाती हैं। अतएव वे स्थानीय भाषा में भी भूमर, घैरा, पाला आदि की रचना करने लगे जो बहुत ही लोकप्रिय सिद्ध हुई। उल्लेखनीय है कि सदुपाध्याय जी के पूर्व लोक-भाषा में इस प्रकार की रचनाएं नहीं के बराबर थीं और इन्हें ही स्थानीय लोक-भाषा में सर्व प्रथम इस प्रकार की रचनाएं करने का श्रेय

है जो अपने आप में एक साहित्यिक "स्कूल" कहा जा सकता है।

२० रुपए की अंतिम निधि को मां दुर्गा के चरणों में अर्पित करके सदुपाध्याय जी 'सर्वहारा' तो बन गए, किन्तु जीवन की यथार्थ आवश्यकताओं को कैसे भुला सकते थे, उसमें भी जब गार्हस्थ जीवन अंगीकार कर चुके थे। वाणी के रूप में भगवत्कृपा इस भक्त कवि की विपन्नता को दूर करने के लिए प्रकट हुई। निकट के लक्ष्मीपुर इस्टेट के राजा स्वर्गीय प्रताप नारायण देव जी उनकी रचनाओं से अत्यधिक प्रसन्न एवं प्रभावित हुए। सदुपाध्याय जी ने "बृहत् भूसर रस-मञ्जरी" में कृतज्ञता प्रकाश के रूप में स्वयं लिखा है, "लक्ष्मीपुर इस्टेट के स्वर्गीय ठाकुर प्रताप नारायण देव बहादुर ने मुझे फागा ग्राम में जा साढ़े सैंतीस बीघा जमीन ब्रह्मोत्तर के रूप में दी है, मैं बड़े ही सुख से उसका अधिकार-भोग कर रहा हूँ और कृतज्ञतापूर्ण शब्दों में सदा आशीर्वाद देता हूँ कि ठाकुर साहिब की दिवंगत आत्मा इन्द्र की भाँति चिरकाल तक स्वर्ग में सुख-भोग करती रहे। ठाकुर साहिब की बड़ी रानी श्रीमती कुसुम कुमारी देवी जी भी मुझे स्नेह की दृष्टि से देखती रही हैं। अतः मैं आशीर्वाद देता हूँ कि रानी साहिबा दीर्घायु हों और चिरकाल तक राज्य-भोग करती रहें।"

फिर क्या था। सदुपाध्याय जी की रचनाएँ इस अंचल के गांव-गांव में फैल गईं। संताल परगना, वीरभूम, मानभूम, (अब पुर्नलिया एवं धनबाद), सिंहभूम, मानभूम, बांकुरा,

मिदनापुर आदि स्थानों में इस महान् लोक-कवि की चर्चा होने लगी। उनकी सरस रचनाओं से छोटे-बड़े सब आनन्द लेने लगे। बड़े-बड़े घाटवालों एवं राजा-महाराजाओं की दृष्टि इनकी ओर आकृष्ट हुई। काशीपुर पंचकोट के राजा ने इन्हें यथेष्ट सम्मान दिया। इनके रहने के लिए देवघर में एक सकान खरीद दिया। साथ ही सरदार पण्डा की गद्दी प्राप्त करने में भी सहायता की। जामताड़ा के राजा ने भी इनकी पर्याप्त प्रतिष्ठा की और धन दिया। २०वीं शती में सदुपाध्याय जी ही एक ऐसे लोक-प्रिय कवि हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं के चल बड़े-बड़े राजा, जमीन्दारों को प्रभावित किया और प्रचुर धन-यश अर्जन किया तथा जिनकी रचनाएँ बगैर किसी प्रचार-प्रसार के जन-जन के कंठ में जा बैठीं। आज देवघर, पुरुलिया, धनबाद आदि स्थानों में सदुपाध्याय जी की रचनाएँ जन-जीवन के अभिन्न अंग बन गई हैं—सादर और हंफ पर उनके पद जहाँ-तहाँ सुनाई पड़ते हैं।

काव्य-रचना का माध्यम

"बंगाल जो आज सोचता है, भारत पचास वर्ष के बाद उसे सोच पाता है," यह कथन अन्यत्र जो भी हो किन्तु सदुपाध्याय जी की रचनाओं के साथ शत प्रति शत सही है। यद्यपि कवि की काव्य-रचना का माध्यम बंगला एवं मैथिली दोनों रही हैं, किन्तु आज से ४०-५० वर्ष पूर्व ही उनकी रचनाओं का संग्रह बंगला में प्रकाशित हुआ जिसके अनेक

संस्करण आज तक निकल चुके हैं। ब्रजभाषामिश्रित हिन्दी में भी, इनकी कुछ रचनाएँ हैं।

सदुपाध्याय जी ही प्रथम कवि हैं जिन्होंने मैथिली के स्थायी रूप में सर्व-प्रथम रचनाएँ की हैं जो उनकी बंगला-रचनाओं के समान ही लोकप्रिय, सरस तथा साहित्यिक हैं। सदुपाध्याय जी के हाथों मैथिली की स्थानीय बोली (देवचरिया) ने लखौटि के काव्य-प्रणयन की श्रमता प्राप्त की है। मैथिली ऐसी प्राचीन साहित्यिक भाषा है जिसकी काव्यगत रीति का चर्लेख दसवीं शती में राजशेखर द्वारा प्रणीत "काव्य मीमांसा" में पाया जाता है। इस प्राचीन साहित्यिक भाषा का प्रभाव पूर्व भारत की असमिया, बंगला एवं उड़िया भाषाओं पर भी विद्वानों द्वारा स्वीकार किया जा चुका है। सदुपाध्याय जी की रचनाएँ मैथिली रीति के अन्तर्गत आती हैं।

पिछले पाँच सौ वर्षों से गंगा के उत्तर से मैथिली भाषा भाषी लोग गंगा के दक्षिण में आ आ कर बसते गए। देवघर के ब्राह्मणों (पण्डों) के पूर्वज भी इसी क्रम में यहाँ आये। उनके साथ मैथिली भी आई। काल एवं स्थान भिन्नता के प्रभाव के साथ आज वही यहाँ बोली जाती है। इसी पृष्ठि भूमि में सदुपाध्याय जी की बंगला-इतर रचनाओं का अभ्ययन-मन न वाञ्छनीय है।

काव्य-सर्जना में भाषा एवं उसकी रीति से अधिक

परम्परा तथा परिवेश का महत्त्व रहता है। इस दृष्टि से निश्चय ही सदुपाध्याय जी स्थानीय बोलियों, काव्य शैलियों तथा रीतियों की परम्परा से भी प्रभाव ग्रहण करते-रहे हैं।

सदुपाध्याय जी भारद्वाज गौत्रीय बेलोंचे-गढ़ मूलक मैथिल ब्राह्मण हैं। यह बेलोंचे-गढ़ दरभंगे के सकरी रेलवे स्टेशन के निकट है जिसके पास ही किसी समय कर्णाट वंशीय मैथिल नरेशों की राजधानी थी। संभव है, कर्णाट-वंश के अंतिम राजा हरिसिंह देव के अन्तर्धान होने और ओइन-वार वंशीय ब्राह्मण नरेशों के सत्तारूढ़ होने के बाद, सदुपाध्याय जी एवं अधिकांश मैथिल पण्डों के पूर्वज इधर आ बसे और तब से यही हैं।

रचनाएँ एवं प्रकाशित ग्रन्थ

सदुपाध्याय जी ने अपने दस वर्ष के जीवन में मैथिली एवं बंगला में हजारों झुमर, घैरा, पाला, स्तुति, वन्दना आदि लिखे हैं, जिनमें से आज तक मुश्किल से पचीस प्रतिशत ही प्रकाशित हो पाए होंगे। आज भी वे सप्रबाह रचनाएँ करते हैं। आप उनसे किसी भी वस्तु या समारोह के लिए रचना तैयार करके देने का अनुरोध करें, और मात्र पाँच दस मिनट के पश्चात् आपको मन-पसन्द रचना मिल जाएगी। यथार्थ में वे आशु कवि हैं। सबसे बड़ी विशेषता तो उनकी रचना का स्तर है जो आज भी वही है जो ६० वर्ष पहिले था। यह चीज बिरले कवि में देखी जाती है।

सदुपाध्याय जी की रचनाओं के जो संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं उनमें (१) भूमर रस-मञ्जरी (२) भूमर रस-तरंगिणी, (३) बृहत् भूमर रस-मञ्जरी (४) भूमर पारिजात बंगला में हैं। इनके अतिरिक्त बंगला में एक और काव्येतर ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है जो "वैद्यनाथ क्षेत्र सर्वस्व" के नाम से प्रसिद्ध है। उपर्युक्त बंगला ग्रन्थों में से अनेक के कई संस्करण हो चुके हैं। देवनागरी लिपि में आज तक केवल "घैरा रत्न मंजूषा" प्रकाशित हुआ है।

लोक-कवि सरदार पण्डा

बाणी की एकनिष्ठ अराधना केवल कवि को आर्थिक कठिनाई से त्राण दिलाने की दिशा में नहीं सहायक हुई, अपितु सरदार पण्डा की गद्दी पर बैठने के उनके अधिकार को भी सबल बनाया। अपने प्रशंसकों की सहायता से उन्होंने भूतपूर्व सरदार पण्डा उमेशानन्द जी के कैलास बास के पश्चात् कोर्ट में अपना अधिकार रखा और कोर्ट ने उन्हें ही गद्दी का अधिकारी स्वीकार किया। उल्लेखनीय है कि चालीस वर्ष की आयु प्राप्त कर लेने के पश्चात् ही कोई अधिकारी इस गद्दी पर बैठ सकता है। कोर्ट के निर्णयानुसार साढ़े इकतालीस वर्ष की उम्र में (१९३६ साल अर्थात् १९२६ ईस्वी के ज्येष्ठ मास में) सदुपाध्याय जी सरदार पण्डा हुए और आज ४० वर्ष से इस पद को सुशोभित कर रहे हैं।

देखा जाता है, सात्विक स्वभाव के प्रतिभा सम्पन्न

पुरुष जब कभी किसी दायित्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित होता है तो उसके कार्य प्रकृतिरंजन सिद्ध होते हैं। सदुपाध्याय जी ने तारा-मन्दिर का निर्माण किया है, सूर्य भगवान की अपवृत्त मूर्ति के स्थान पर नयी मूर्ति की स्थापना की है, मन्दिर द्वार पर एक शिवाला तथा सुलतान गंज में गंगा नद पर दूसरे शिवाला का निर्माण कराया है, अपने वासस्थान में दुर्गामन्दप एवं कूप का निर्माण कराया है। देवघर के घड़ीदार परिवार सदा से शारदीय दुर्गा पूजा करता आ रहा है। इन्हें आर्थिक सहायता पहुँचाने के उद्देश्य से सदुपाध्याय जी ने एक भव्य भवन निर्माण करा दिया है जिसके किराये से दुर्गा पूजा सोल्लास हुआ करती है। लोकप्रिय कवि सदुपाध्याय जी शिक्षण संस्थाओं को भी सहायता देते आ रहे हैं। हिन्दी के प्रचार-प्रसार के निमित्त इन्होंने स्थानीय सार्वजनिक हिन्दी पुस्तकालय को अच्छी पुस्तकों के साथ एक आलमारी दी है। अनेक वर्षों तक देवघर के रामकृष्ण मिशन विद्यापीठ को वार्षिक १००) रु० की सहायता करते रहे। इस प्रकार के और भी कितने कार्य हैं जो इस कवि सरदार पण्डा ने लोकहित के लिये किए हैं।

भजन, भूमर, घैरा आदि का गायन

सदुपाध्याय जी के जितने भी पद, भजन, भूमर, घैरा, पाला गीत आदि हैं सबके सब गेय हैं और वाद्य यंत्रों के साथ प्रायः सम्मिलित सुर में गाये जाते हैं। इनके पदों को

पेशेवर गायक एवं इनके प्रशंसक तथा अनुचर भी बड़े ही आकर्षक ढंग से गाते हैं।

इनके पद लोक जीवन में इस प्रकार घुल मिल गये हैं कि खेत खलिहान में काम करने वाले मजदूर मकान की छत की पिटाई करते हुए औरतों का झुण्ड, गंगाजल भर कर आते हुए तीर्थयात्रियों के दल सब भाव विभोर होकर इनके पद गाते रहते हैं।

इनके पदों को सुर लय के साथ गाने में जिन लोगों ने ख्याति प्राप्त की है इनमें स्व० शिरोमणि हाजरा, स्व० शम्भूनाथ झा खवाड़े, पुरलिया के प्रसिद्ध भुमर गायक कीर्तिनाथ गोस्वामी, देवघर के स्व० शिरोमणि ठाकुर, श्री विश्वनाथ ठाकुर श्री देवेन्द्र झा, स्व० उपेन्द्र झा, श्री जयनारायण खवाड़े प्रभृति के नाम उल्लेखनीय हैं। स्व० शिरोमणि हाजरा के सम्बन्ध में सदुपाध्याय जी ने स्वयं लिखा है, "बड़ाम के श्रीयुत शिरोमणि हाजरा महाशय जिस भांति मेरे भुमरों का सरस कण्ठ से सम्पूर्ण भाव प्रकट करते हुए गान कर सकते हैं, अन्य किसी को मैंने इस प्रकार गान करते हुए नहीं देखा है।" गणेश कला मन्दिर, देवघर, सदुपाध्याय जी के भुमर घैरा आदि कुशलता पूर्वक सुर लय के साथ उपस्थित करता है।

सदुपाध्याय जी के पद गाते समय भावुक गायकों की तल्लि-
नता देखकर हृदय पुलकित हो उठता है।

भवप्रीतानन्द पदावली (भुमर संगीत)

सदुपाध्याय जी के असंख्य भुमर गीतों में चुन चुनकर कतिपय उत्कृष्ट गीतों को इस संग्रह में रखा गया है जिसकी भूमिका के रूप में ये पंक्तियाँ लिखी जा रही हैं। यह संग्रह अपने आप में एक ऐतिहासिक महत्त्व की चीज है, कारण इसके पूर्व कोई कवि के भुमर गीत देवनागरीलिपि में नहीं प्रकाशित हो सके थे। पिछले साठ वर्ष की अवधि में इन्होंने जो रचनायें की हैं, उनमें से अधिकांश गायकों तथा जन साधारण के कण्ठों में हैं। इस संग्रह में अधिकांश ऐसी ही रचनायें हैं।

पिछले कई महीनों से अधिक परिश्रम करके सदुपाध्याय जी ने अनगिनत पदों में से अनेक पदोंको संग्रहीत करके देवनागरी लिपि में प्रकाशित किया है और आज इसका सोबलास उद्घाटन किया जा रहा है।

भारत के प्राच्य प्रखण्ड के लोकगीत तथा जनमानस को समझने के लिये सदुपाध्यायजी के लिखे पदों का अध्ययन काफी उपादेय सिद्ध होगा। अतएव सदुपाध्याय जी की समस्त रचनाओं को एकत्र किया जाय, उनका विषयानुक्रम

भवप्रीतानन्द ग्रन्थावली के रूप में देवनागरीलिपि में विभिन्न खन्डों में उनका प्रकाशन किया जाय। आज के शुभ दिन जिस पदावली (भुमर संगीत) का उद्गटन किया जा रहा है, वह तो 'संकेत' मात्र है।

सदुपाध्याय जी के हाथ भुमर, क्या भाव, क्या भाषा, क्या संगीत, सभी दृष्टियों से साहित्य संगीत के किस उच्चतम बिन्दु को छूने लगा है, इसके उदाहरण इस छोटे से संग्रह में विद्यमान हैं। 'शिव स्तुति, में जो पद लाटिश्य एवं भाव तीव्रता पाई जाती है, वह सराहनीय हैं। "शिव स्वरूप वर्णन" में शिवजी का मंगलमय रूप कितना सजीव एवं प्रभावोत्पादक है—'भागे आंखि दुलु डलु, भुमर संख्या ६ (भदवारी) में कवि ने निर्गुण गान का प्रतिपादन जिस ढंग से किया है, वह कबीर प्रभृति निर्गुण पंथी कवियों का स्मरण दिलाता है। तुलसी की भांति सदुपाध्याय जी सगुन निर्गुण को अभेद्य मानते हैं। राधा कृष्ण की, संयोग और वियोग दोनों स्थिति में, प्रेम लीलाओं का बड़ा ही मनोमोहनी वर्णन पाया जाता है। संयोग का वर्णन देखिये, भुमर संख्या २२, 'गेहों गगरीया ले जमुना किनरिया वियोग के वर्णन में तो सदुपाध्याय जी कृष्णभक्ति शाखा के कवियों में अग्रगण्य है, देखें, भुमर संख्या ५२, सदुपाध्याय जी ने राष्ट्रीय भावों को लेकर भी कुछ अच्छे भुमर

गीत रचे हैं जो उनकी राष्ट्रीय भावना के परिचायक हैं। "तोरा में विदेशी रवि अस्त हे १५ अगस्त।" चीनके पिछले आक्रमण के संबंध में भी इन्होंने भुमर रचे जो उच्चकोटि के राष्ट्रीय गीत हैं। हास्य बिनोद को लेकर भी सदुपाध्याय जी ने भुमर लिखे हैं। "लकन्दर महात्म्य" तथा 'आलू चाप' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रस्तुत पदावली में बानगी के बतौर ही उनके थोड़े से भुमर-गीत सजाये गए हैं। देवनागरी लिपि में छपने के कारण यह संग्रह अवश्य ही अत्यधिक लोक प्रिय सिद्ध होगा।

साहित्यिक मूल्यांकन

लोक जीवन को छूने और आलोक्षित करनेवाला काव्य ही समय की कसौटी पर खरा उतरता है। इस दृष्टि से सदुपाध्याय जी की रचनाएँ पूर्ण सफल रही हैं। अपनी प्रतिभा के बल इन्होंने लोक भाषा को जो साहित्यिक सौष्ठव प्रदान किया है, वह तुलसी की प्रतिभा की याद दिलाता है। एक ओर जहाँ बड़े बड़े विद्वान् इनकी रचनाओं का अर्थ करने में दुरुहता का बोध करते हैं, वहीं दूसरी ओर जन-साधारण भी आसानी से इनका रसास्वादन कर लेते हैं।

रस और अलंकार की दृष्टि से भी सदुपाध्याय जी की रचनाएँ बेजोड़ हैं। उपमा के प्रयोग में आप अनुपमेय हैं। करुण रस का उदाहरण देखना हो तो उनकी रचनाओं को

सुर-लय के साथ गाते हुए व्यक्ति और सुनने वालों के मनोभाव को देखें। दोनों की आंखों से भाव-विभोरावस्था में झर-झर आंसू गिरते रहते हैं। इनकी रचनाओं की यह विशेषता इन्हें विद्यापति, चण्डीदास, मीरा प्रभृति कवियों की श्रेणी में ला रखती है।

प्रकृति-वर्णन तो इनकी रचनाओं में कूट-कूट भरा हुआ है जो अत्यधिक सजीव एवं प्राणवान है। जंगल, पहाड़, झरना, नदी, चांदल, बिजुली आदि के वर्णन इतने सरस एवं सुन्दर हैं कि इनका प्रत्यक्ष चित्र मानस-पट-पर उतर आता है। जंगल और जंगली जीव-जन्तु, पशु-पक्षी से सदुपाध्याय जी की विशेष रुचि है जो उनकी रचनाओं में भी परिलक्षित होती है और जीवन में भी। आज भी अपने घर में वे अनेकों जीव-जन्तु (हिरनादि) पशु-पक्षी पाले हुए हैं जो छोटा चिड़िया खाना के समान है। कुण्डा और रामपुर ग्राम के मनोहर प्राकृतिक वातावरण के चलते ही सदुपाध्याय जी में प्रकृति के प्रति ऐसा तादात्म्य पाया जाता है। आज भी कवि रामपुर के सुहावने वन-प्रांत, पहाड़ी नदियों, उषा एवं अरुणोदय, चांदनी रात, सन्नाटा भरी बरसाती काली रातें आदि का स्मरण करके भाव-विह्वल हो जाते हैं।

सदुपाध्याय जी की काव्य-प्रतिभा प्रधानतः गीत्यात्मक है जो नाट्य-तत्वों से परिपूर्ण है।

पौराणिक कथाओं पर आधारित इनके पाला गीत यद्यपि

प्रबंध काव्य की श्रेणी में रखे जा सकते हैं किन्तु इनमें भी गीति एवं नाट्य तत्व ही प्रधान हैं। सदुपाध्याय जी एक महान् भक्त कवि हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा एक विलक्षण धार्मिक समन्वय की स्थापना की है। इन्होंने शिव की स्तुति लिखी है, आद्या-शक्ति की स्तुति लिखी है, राम-कृष्ण, गणपति आदि देवताओं के ऊपर रचनाएं की हैं। जहां प्रायः भक्त कवियों की रचनाएं सम्प्रदाय विशेष तक सीमित पाई जाती हैं, सदुपाध्याय जी की रचनाएं सभी सम्प्रदायों के लोग समान रूप से पसन्द करते हैं। प्रत्यक्षतः वे शिव के आराधक हैं, विष्णु की विभिन्न लीलाओं के गायक और जगज्जनी मां दुर्गा के उपासक। इन्हें किसी एक सम्प्रदाय में सीमित करना संभव नहीं।

सदुपाध्याय जी की राधा-कृष्ण विषयक भक्ति की प्रगाढ़ता को स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं। इनकी रचनाएं इसके ज्वलंत प्रमाण हैं। कवि अपने को राधा का पुत्र समझते हैं। ऐसा समझने का कारण भी है। अनेक वर्ष पूर्व कवि ने राधा-कृष्ण की जोड़ी को सपने में देखा। भगवान् कृष्ण राधा से कह रहे थे, "इसे तुम अपना पुत्र समझो।" तबसे कवि अपने को राधा का पुत्र ही मानते हैं।

सदुपाध्याय जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व के संबंध में संस्कृत बंगला, हिन्दी, मैथिली और अंग्रेजी के पत्र-पत्रिकाओं में पिछले २०/४० वर्ष से चर्चा हो रही है। एक बंगला पत्र में तो यहां

तक प्रकाशित किया गया कि बंगला लोक साहित्य के गौरव-रत्न भवप्रीतानन्द १६वीं शती के कवि थे जिनका जन्म बंगाल के बीरभूम जिले में हुआ था। ऐसा लिखने का जो भी कारण तथा अभिप्राय रहा हो किन्तु इससे इस महाकवि की महत्ता स्पष्ट सामने आती है, अन्यथा 'अपनाने' का ऐसा प्रयास क्यों?

बंगला साहित्य के मार्मिक विद्वान् डा० सुकुमार सेन ने सदुपाध्याय जी की रचनाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

बिहार विश्वविद्यालय के मैथिली के रीडर प्रो० रमानाथ झा जी ने अपने अंग्रेजी निबंध में सदुपाध्याय जी को मैथिली के सर्वश्रेष्ठ लोक-कवि के रूप में स्वीकार किया है।

भागलपुर विश्वविद्यालय के डा० बेचन लिखते हैं, "इनकी रचनाएं मिथिला से बंगाल तक आज जन-मानस का अंग बनकर लोक-कंठ में समा गई हैं।"

बंगाल के प्रसिद्ध विद्वान् डा० सुधीर कुमार करण एम०ए० अपनी "सीमान्त बंगला लोकयान" नामक पुस्तक में सदुपाध्याय जी की रचनाओं की चर्चा करते हुए लिखते हैं, "भूमर-जगत् के गुरु के रूप में इनकी मान्यता है। इनके पदों के भाव लोकायन हैं किन्तु भाषा शिक्षालब्ध। पदों के सुर भी मूलतः लोकायन एवं मादक-डंका के ताल में ही सुनने में अधिक अच्छा लगता है।

देवघर के रामकृष्ण मिशन विद्यापीठ द्वारा "संगीत संप्रह" नामसे जो बंगला ग्रन्थ प्रकाशित है; इसमें सदुपाध्याय जी के

कुछ उत्कृष्ट भूमर-गीत दिए गए हैं जो वहां के छात्र सुर के साथ गाते हैं। उक्त ग्रन्थ के विद्वान् संकलयिता ने लिखा है, "भूमर से हमलोग संताल, बाउरी प्रभृति छोटी जाति के लोगों के अश्लील गीत समझते थे। किन्तु सदुपाध्याय श्री श्री भवप्रीतानन्द ओझा ने देव-देवी विषयक तथा आध्यात्मिक भाव-सम्बन्धित बहुत से भक्ति-परक भूमर-गीतों की रचना करके इन्हें उबकोटि के शास्त्रीय संगीत की श्रेणी में पहुँचा दिया है।"

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि स्वर्गीय द्विजेन्द्र एम० ए० ने लिखा है, "वैद्यनाथ धाम वासतव्य कविवर भवप्रीतानन्द भाक कविता-माधुरीक आस्वाद जनिका प्राप्त भेल छन्हि, हुनका निरसंकोच कहए पड़तन्हि जे बीणापाणिक एहि वरद पुत्रक लेखनी में अजस्र काव्य-शक्ति सन्निहित आछि।"

श्री विष्णुकान्त झा जी ने "श्री वैद्यनाथ शिव प्रशस्ति" नामक अपने संस्कृत ग्रन्थ में लिखा है:—

"अनेकः ग्रन्थास्ते विरचमं शुर्वहु बचसाम्
तथा लोकयंगीतं विदितमिह यस्यासि विपुलम्
स मान्यः पण्डेशो गिरिपति सुतेशार्चनरतो
"भवप्रीतानन्दो" जयति बुधधंसः कवि-वरः"

बिहार सरकार के संस्कृत अध्ययन-अध्यापन के निरीक्ष-णाध्यक्ष श्री रामनारायण शर्मा जी ने सन् १९४३ में ही सदुपाध्याय जी के संबंध में अपने भाव इन शब्दों में व्यक्त किये थे।

“एषा काव्यं नैसर्गिकम् । एतेलज्जसा जनक वय इति वर्णयुं शस्यन्ते । सत्ये काल पारिपाकेणैते पाङ्गुतय पर्चाया मूमर्यादयश्च सविशेषज्जनहृत्पीठ मधिष्ठास्यन्ति । यत्र तत्र गीतिषु जयदेव कविर्भीतिपंक्तीनां विद्यापति गीति पंक्तोनाञ्च संकार संवाद्भवाकल्प निमीलित दृशा”

संस्कृत के उद्भट विज्ञान स्व० त्रिलोकनाथ मिश्र जी ने लिखा है—

“यावदिन्दुमिहि सै महीधराः सिन्धवश्च सरलाश्च कासितिताम् तावदस्य विदुषोऽतिनिर्मलाः सवत कृतिकला विराज”

१९६४ में भारतीय नृत्य कला मंदिर की ओर से सद्गुपाध्याय जी को ‘लोक गीत विषयक लम्बी और निष्ठापूर्ण सेवाओं के लिए उन्हें एक ताम्र पत्र सम्मानपूर्ण भेंट के रूप में बिहार के तत्कालीन शिक्षा मंत्री जी के द्वारा प्रदान किया गया।

अभिनव विद्यापति

मैथिल कवि कोकिल विद्यापति एवं सद्गुपाध्याय श्री श्री अवनीतानन्द जी के व्यक्तित्व तथा कृतित्व में जितने अधिक साम्य हैं उतने शायद ही भारतीय वाङ्मय के दो कवियों में अन्यत्र कहीं मिल सकें । साहित्य के इतिहास में ऐसा देखा जाता है कि यदि दो महान् कवियों में साम्य पाया जाय तो अपर को पूर्ववर्ती कवि का अभिनव रूप ही समझा जाता है । स्वयं विद्यापति “अभिनव जय देव” के नाम से विख्यात हैं । विद्यापति एवं सद्गुपाध्याय जी में समता की मात्रा उस सीमा

तक पाई जाती है जहाँ अभिनव शब्द का प्रयोग पूर्ण स्वाभाविक हो जाता है । दोनों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में अपूर्व साम्य है ।

विद्यापति की तरह सद्गुपाध्याय जी उच्चकुलीन गृहस्थ मैथिल ब्राह्मण देशील बयना के प्रति विशेष आग्रहशील, काव्य प्रतिभा में गीत्यात्मक, धार्मिक समन्वय एवं सहिष्णुता के प्रतीक, जन-साधारण एवं पेशेवर गायक के कंठ में बसने वाले, अन्तर्प्रान्तीय ख्यातिप्राप्त, दीर्घजीवी, देव-मंदिर धर्मशाला आदि के निर्माता, शिव के आराधक, शक्ति के उपासक और विष्णु की इह-लौकिक लीला के गायक हैं । विद्यापति की ही तरह सद्गुपाध्याय जी को भी वंगाली विद्वानों ने अपनाने का असफल प्रयास किया है । दोनों ने घुरे दिन देखे और उन्हें पूरे धैर्य, आत्म-विश्वास तथा कर्मठता से भेला । विद्यापति की तरह सद्गुपाध्याय जी भारतीय वाङ्मय के अमूल्य रत्न हैं जिनका प्रकाश दिन-दिन नवीनता प्राप्त करता रहेगा ।

हम अपने ‘अभिनव विद्यापति’ का हृदय से अभिनन्दन करते हैं और इनके सुदीर्घ जीवन की कामना रखते हैं ।

वैद्यनाथ-धाम देवघर ।

१५-६-१९६५

मोक्षानाथ झा

प्राचार्य



❀ सूची पत्र ❀

	विषय	पृष्ठ संख्या
१	जय जयति हर हर भजन (शिव स्तुति)	१
२	देखु जोगिया के रंग " (नचारी)	२

— भूमर छलक —

३	भजत हर हर पद कमल (भूमर-शिव वन्दना)	३
४	गौर अङ्ग जटी गंग (भूमर शिव महिमा)	४
५	भांगे आखि दुलू दुलू (शिव स्वरूप वर्णन)	४
६	जय जय प्रभु जय महेश	
	(वैद्यनाथ स्तुति बंगला मिश्रित)	५
७	चित्तै चरणमा कि भूमटा	७
८	देखो माया के बादरा भूमर-निर्गुण	७
९	दारुण संसार " "	८
१०	खाली हाथै एका आय " "	९
११	माया के संसार " "	१०
१२	कृष्ण जन्म पाला भूमर	११
१३	कारा गृह जनमल आज श्रीहरि "	१२
१४	जागी प्रहरी (छन्द-पयार)	१३
१५	आकाशे भगवती (भूमर-भादुरिया)	१४
१६	देव देवी हरपित नाचे " "	१४

(२)

विषय	पृष्ठ
(कृष्ण जन्म पाला समाप्त)	
१७ देया नाचत कन्हैया—(कृष्ण बाल्य लीला)	१५
१८ नन्द के छयला कृष्ण—(दांड भूमरा)	१६
१९ त्रिभंग मूरति सोहान—(कृष्ण रूप वर्णन)	१७
२० बड़ी हठी कालिया किशोर (कृष्ण लीला)	१८
२१ रे कदम तर (दांड भूमरा)	१८
२२ कैसे जावे, नीर भरेल सजनिया (दांड भूमरा)	१९
२३ कन्हैया ऐसन पिया जाल दिहा देवा "	२०
२४ मोहन जी के हंसीया (भूमटा)	२१
२५ छैला बसीया बजावे कदम तरें "	२२
२६ मेघा चहरावे कि पानी बरवावे "	२३
२७ देया, वंशी के बजैया (भूमर) कृष्ण लीला	२४
२८ नागर बजावे बसुरिया कि सहि तरें "	२५
२९ देखथो गगरी फोरी " "	२५
३० चढ़ला कदमा हारी " "	२६
३१ आबी एके तनिया " "	२७
३२ दये वंशी सिंध काठि " "	२८
३३ आननी सोहान मधु निशि " "	२९
३४ मोहन तोरे लागी " "	३०
३५ चन्दा संगे रस रंगे भूमर राधा के मान	३१
३६ बांसी बाजे विपिन में " "	३१

विषय	पृष्ठ
३७ दूती ने बुझये बतिया (कृष्ण लीला)	३२
३८ बांसु के बांसुरिया रे (बंशी महिमा)	३३
३९ बांसुरिया तान में जोड़ले कैसे बाण ,	३३
४० जीवन किशोरी (राधा के प्रति कृष्ण की उक्ति)	३४
४१ कामिनी कुंतल जाल	३५
४२ बरषा ऋतु मंत्री आज (वर्षा आगमन)	३६
४३ दूती ! पनिया बरसे	३६
४४ गरजे बदरिया कि बिजुली लहरिया हो राम	३७
४५ सपना सगुन देखी	३८
४६ राम ! गेलो कुंज गलियां	३९
४७ ई केकरी बहुआरी ? (दांड मूमरा)	४०
४८ फूटे कदम वन अरु केतकी वन (मूमर)	४१
४९ लटकै सावन वन (मूमरा)	४२
५० बाजे वन बंशी-बंशीधर के राति दुपहर के (मूमर)	४३
५१ मूमन पाला (त्रिपदी-छन्द) दंगला मिश्रित	४४
५२ रसिक रंगिया	४५
५३ लागे मूला निकुंज भीतर में	४६
५४ दोले राधा श्याम प्रेमाकुल	४७
५५ बाजत वन बंशी-बंशीधर के	४७
५६ भादव अंधारि भयंकर राति लागे डर	४८
५७ हरीहर गाछे मौरा (वेलपत्र के प्रति मूमर)	४९

विषय	पृष्ठ
५८ सुनियां सघन मुरलीवान (राधा के उक्ति)	५०
५९ मधुर मधुर सुरें बाजे बांसीया सखी !	५१
६० बरसे भादव राति	५२
६१ बाजे मोहन बंसुरिया भिजी चुनरी	५३
६२ आखियां मेहेतें धनी धाय जहां श्याम राय	५४
६३ तोर मुख हेरी टूटे शशी के गुमान	५५
६४ नामी तोर केशिया	५६
६५ राति कुंजे अकेली तड़पे जीहा मोर	५६
६६ सजन चकेवा चकेवी दुखि आखिया तोर (दांड मूमरा)	५७
६७ राति अंधारी वनें मूमर (भादव रातिक वर्णन)	५८
६८ श्याम चले राधा के पास (हिन्दी मूमर)	५९

कृष्ण के मधुरा गमन

६९ श्याम ने जाह मधुरा मूमर	६०
७० भदरा बदरा जोखें मरे आखि मूमर (विरह)	६१
७१ बड़ी गेले गुगना पिंजड़ा भेले गुन रे मूमर	६२
७२ हायरे करम भेले वाम मूमर विरह	६२
७३ सखी ! सभे सुन भेले , (भादुरिया)	६३
७४ कौने मोर कन्हैया लाल ले गेली चोराय ,	६४
७५ गरजे बदरा घोर हिया मारे शैल गो ,	६५
७६ तेजी गेलाय दुपतिया ,	६६

विषय	पृष्ठ
७७ कोयलिया, यहाँ काहे राति करे शोर, झूमर भादुरिया	६७
७८ जबसे तेजला बुन्दावन नील-माधव	६७
७९ आँखियां निन्दो नाहीं झूमर भादवार	६८
८० कलपी-कलपी फाटे हिया	६९
८१ ने आले कर्दिया	७०
८२ उधो, कि कहव तोरा	७१
८३ उधो हमरे अभाग	७२
८४ चली भेला मथुरा नगर में	७३
८५ कोकिल काहे कूहके ?	७४
८६ बांधी गेला पीरीति बन्धन रे सखी	७५
८७ राम ! श्यामला सुरतिया	७७
८८ जों जों गरजे कारि रे बदरिया	७८
८९ देखते भदरा सोहान मे दूती !	७८
९० कोयलिया आधिराति काहे करेशोर ?	७९
९१ राति मकारि कि तहाँ काहे ?	८०

माणेश महिमा

९२ दूती ! सुन्दर मूरति	झूमर भादवारी	८१
९३ समे देखाय जैसन लाल	" "	८२
९४ जयदेव गणपतिया	" "	८३
९५ कैसे तोरा देव विसर्जन	" "	८४

विषय	पृष्ठ
९६ तोरामें अम्बिका आगमन हे आश्विन झूमर भादवारी	८५
९७ आवे फूटलो कांश	८६
९८ देखथीं असुरे मारी (दशभुजा भगवती रूप वर्णन)	८७
९९ शरत के चांद हेरो सखी, मगन चकोर !	झूमर भादुरिया ८८
१०० उधो ! बड़ी भागी मिले निलमणिया रे ना (महराई)	८९
१०१ नारी तोर बलिहारी ।	झूमर-भादुरिया ९०
तारक मंत्र,	९१
१०२ काशीधाम महात्म्य (तारक मंत्र) त्रिपदी छन्द	९२
जगत में धन्य काशी धाम	
१०३ येहो विश्व माया के विकार	झूमर भादुरिया ९३
१०४ समय के नदिया बही जाय	झूमर भादवारी ९३
१०५ दारुण बूढ़ापा देख	९४
१०६ गौरी ! बरवम भिखारो	९५
१०७ करमेर गति दूती अति न्यारी	९७
१०८ बिद्या रतन आंखि के आंख	९८

राष्ट्रीय झूमर

१०९ तोरा में विदेशी रवि अस्त हे १५ अगस्त ! झूमर	१००
चीनी आक्रमण के चुनौती :	
११० सीमा छोड़ि भाग दुराचार	१०१
१११ पापीक करे देशसे बहार रे	१०२

વિષય	પૃષ્ઠ
હાસ્ય વિનોદ (મૂમર ભાટુરિયા)	
૧૧૨ મૈયા લકન્દર (લકન્દર મહાત્મ્ય)	૧૦૪
૧૧૩ મવે મયનાહી આર (બંગલા) મૂમર	૧૦૫
૧૧૪ આલુ ચપ મહિમા " "	૧૦૬
૧૧૫ આલુચપ પરિચય " "	૧૦૮
૧૧૬ પુછે રાધા પ્યારી મૂમર (ભાટુરિયા)	૧૦૬
૧૧૭ ળચન સોહાન (નવાન્ન વર્ણન)	૧૧૦
૧૧૮ મોહો જય મધુસૂદન (બંગલા) મૂમર	૧૧૧
૧૧૯ આમાર સારાટિ જીવન ગેહો " "	૧૧૨





सदुपाध्याय

श्री श्री भवप्रीतानन्द ओम्का

(ब्रह्मनाथ मन्दिर के मठाधीश)

जन्म

(आश्विन कृष्ण नवमी
बुद्धवार को सन् १८८६ ई०)

वर्त्तमान उम्र ८३ वर्ष
(१६ सितम्बर १९६८)



भवप्रीतानन्द पदावली

(१) भजन

(शिव स्तुति)

॥ धुन ॥ जय जयति हर हर, करुणा सागर,
चन्द्र-धर, परमेश्वर ॥

स्फटिक तन पर भस्म फण-धर
डमरू शूल-धृत श्रीकर ।
पीत जट पर गंग सुन्दर
हेम गत हीरक तर ॥ धुन ॥

वासव निज कर करत चामर
छत्र वर धर श्रीधर ।
रमत शृष पर प्रेत सहचर
पूजत सुर नर खेचर ॥ धुन ॥

अर्द्धनारीश्वर, करी चर्माम्बर
त्रिनेत्र त्रिगुण गुणाकर ।
तारहु "वामर भवप्रीता नर"
पतित पावन शंकर ! ॥ धुन ॥

(२)

(०) भजन (मचारी)

॥ धुन ॥ देखु जोगिया के रंग, देखु जोगिया के रंग ।
तपसीके भेषधारी नारी अरधंग ॥

विहसित पंचमुख, आनन्द उमंग ।
कपारें अग्नि, जटा रंग तरंग ॥ धुन ॥
हाथें अभय वर, कुठार कुरंग ।
शीश पर मुकुट जे विकट भुजंग ॥ धुन ॥
गौर वरण तीन नयन सुदंग ।
भालें सुधाकर, गलें गरल प्रसंग ॥ धुन ॥
अनका के देखिन्, अन्न वसन सुरंग ।
अपना ले भांगगोला, रहसि उलंग ॥
“भवप्रीताक्” देव हर ! चरण सुभंग ।
देहा छाड़िक् उड़े बेरी पराण विहंग ॥ धुन ॥



(३)

❀ भूमट-शतक ❀



भूम्नर (१) — शिव वन्दना
(अयुक्ताक्षरी मात्रा वर्जित)

॥ धुन ॥ भजत रह हर पद कमल ॥
भगत-जन-नरक-शमन करण मन सकल ॥ धुन ॥
रजत वरण पन्व वदन असम नयन मदन दहन
दमन शमन बल
चरम वसन, गरल-अशन सदन-वर-अचल ॥ धुन ॥
तन पर कत उरग चपल भल-मल शव भस्म धवल
सजल जट सकल ।
बलद ऊपर रमत नगर, नमत अमर दल ॥ धुन ॥
भवस कहत “भव” इ वचन जनम-मरण-करह-हरण
वरह पद अटल ।
तवळ भवन गमन करण करह पथ सरल ॥ धुन ॥

(४)

भूष्मर (२) — (शिव महिमा)

गौर अङ्ग जटौ गङ्गा सुमुकुट मणिमय भुजंग
लये सङ्ग उमा के आदर से ।

॥ धुन ॥ चलला धाकर से ॥

सर्वाधिराज गमन साज, देखि धावे अमर राज
सह समाज सेवेलै छत्र चौर से ।

मिलला ईश्वर से ॥ धुन ॥

आध खेत भूतप्रेत, आधमें सुरदल समेत
शोभा देत, प्रमथ अमर से ।

प्रभु के लस्कर से ॥ धुन ॥

करुणाकर ! जनमहर, ताकूँ एकहि मजर
मांगै वर भवप्रीता हर से ।

करुणा सागर से ॥ धुन ॥

भूष्मर (३) — (शिव स्वरूप वर्णन)

भांगेँ आँखि दुलू-दुलू, भांगेँ आँखि दुलू दुलू

भांगेँ आँखि दुलू दुलू ।

जटौ बीच गङ्गा कुलू-कुलू ॥

॥ धुन ॥ भांगेँ आँखि दुलू दुलू ॥

(५)

ईश्वर शिव सुन्दर, हेम गौर कलेवर

भांगेँ आँखि दुलू दुलू ।

देहा पर सँपा छलू मुलू ॥ धुन ॥

कपारेँ किशोर चाँद, दाढ़ां-बाघ छाल बांध

भांगेँ आँखि दुलू दुलू ।

कान में धधुरा झुलू-झुलू ॥ धुन ॥

रमत वृषभ पर, कोरेँ गौरी गणेश

भांगेँ आँखि दुलू दुलू ।

नाचे भूता हँसे खुलू खुलू ॥ धुन ॥

भवप्रीताकू निवेदन अन्तेँ दिहा श्रीचरण

भांगेँ आँखि दुलू दुलू ।

(जैसेँ) यमें ताकी रहे मुलू मुलू ॥ धुन ॥



(४) भूष्मर वेशनाथ-स्तुति (बंगला में)

जय जय प्रभु ! जय महेश, वैद्यनाथ शिव सुरेश,

रुद्र वेश, शेष मुकुट साजे ।

भक्त क्लेश पापलेश, कर विनाश व्योमकेश

भाल देश मण्डित द्विज राजे ॥

॥ धुन ॥ डिमि डिमि डिमि डमरू, करे बाजे, करे बाजे
 अभय चरणे देहि शरण प्रणमि प्रमथ राजे ॥
 नाचत प्रभु भूत संग विभूति भूषित धवल अंग
 कत भुजंग अंग-अंगे साजे ।
 क्रोधे दग्ध मेल अनंग, त्रिशूले त्रिपुर अङ्ग भङ्ग
 करे कुरङ्ग वराभय टङ्क साजे ॥ धुन ॥
 त्रिनयने रवि सोम हुताश, पञ्च वदने सधुर हास
 करे विलास सुरधुनी जटा माझे ।
 अन्तरे होवल कृपा विकाश, शमन पाश त्रास नाश
 करिलेन प्रभु ! द्विज सुत हित काजे ॥ धुन ॥
 सिन्धु मथने उपजे गरल, भये त्रिभुवन करे टलमल
 सुर दल अति कम्पित भय लाजे ।
 सदय आपनि हये महाबल ! तरल गरल कण्ठे अचल
 करिया, नील-कण्ठ रूप विराजे ॥ धुन ॥
 परमा प्रकृति करिया धारण, त्रिगुणे त्रिमूर्ति करि प्रकाशन
 सृजन पालन संहरण तीन काजे ।
 भवप्रीता भणे जीवने मरणे, मम गति तव अभय चरणे
 एई रूप जैन हृदये सतत राजे ॥ धुन ॥

(८६) भूमर (भूमटा)

चितें चरणमा, कि रूप नयनमा, रसनमा में
 ॥ धुन ॥ दुर्गा नाम रदनमा रसनमा में ॥
 चरित श्रवणमा कि महीमा मननमा जीवनमा में ।
 भक्ति रस सिंचनमा जीवनमा में । धुन ॥
 हाथ से पूजनमा कि अन्तरे जपनमा चलनमा में ।
 नित देवी प्रदक्षिणमा चलनमा में ॥ धुन ॥
 "अवष्टोताक" मनमा कि दुर्गा शरणमा मरणमा में ।
 जैसे ने छुए शमनमा मरणमा में ॥ धुन ॥
 (मैयाक ज्योति मिलनमा मरणमा में) ॥

— ० —

(८७) भूमर (भदवारी) निर्गुण

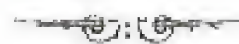
देखो माया के बादरा, देखो माया के बादरा
 ॥ धुन ॥ देखो माया के बादरा ॥
 लोभा के राम धनुक् शोभा उजियारा ॥ धुन ॥
 भव नदी बांध घोर, वासना के डेउ जोर,
 मोह अधियारा ।
 क्रोध के वज्र हुँकार, काम जल-धारा ॥ धुन ॥

मद के बहै तूफान मात्सर्य विजुली जान
हम दिशा हारा ।
अगम अथाह् पानी बीचें जाय मारा ॥ धुन ॥
अवघ्रीता कहै सार, तयो हमें होयै पार
जों मिले सहारा ।
खेपन हार भोला नाथ, नावक् नाम तारा ॥ धुन ॥

(७) भ्रूम्बर (भदवारी) निर्गुण

धन जन परिवार क्षणमें सभे उजार
दारुण संसार ।
छीरे, दारुण संसार ॥
॥ धुन ॥ तोरा सँ उचटै जी हमार रे, दारुण संसार
प्राणी सभे काल के आहार रे, दारुण संसार ॥
माटी लागी काटा काटी, नारी लागी लाठा लाठी
दारुण संसार ।
पेट लागी कतै पापाचार रे, दारुण संसार ॥ धुन ॥
रोग शोक अपमानि नारी सुत धन हानि
दारुण संसार ।
बरषये बरछी जे हजार रे, दारुण संसार ।
काहुँ हांसी काहुँ हाहाकार रे, दारुण संसार ॥ धुन ॥

“अवघ्रीता” कहै सार, एकहि चैतन्याधार
दारुण संसार ।
आरो सभे स्वपन आकार रे, दारुण संसार ।
तोर माया “वेड़ी-कारागार” रे, दारुण संसार ॥ धुन ॥



(८) भ्रूम्बर निर्गुण

खाली हाथें एका आय, भूललों धन जन पाय ।
अन्तरें हुलाशा रे मन,
अन्तरें हुलाशा ।
कामिनी कांचन लागी, बाढ़त पियासा
रे मन ! चारि दिनक् बासा ।
पानी के बताशा जैसेँ तन के तमाशा रे मन ॥
॥ धुन ॥ चारि दिनक् बासा ॥
माटी पानी अग्निनी आर पवन सहित चार
पंचम आकाशा ।
रे मन ! पंचम आकाशा ।
ताहि से गठित देहा तेकरो कि आशा रे मन ॥ धुन ॥

तब लागि सुत नारी, वित्त ओ महल भारी

जब लागि श्वांसा

रे मन ! जब लागि श्वांसा ।

देतो रे ! कंचन काया, जरीकेँ हुताशा रे मन ॥ धुन ॥

“भवप्रीता” कहै सार, यातायात बारम्बार

बांधन करम पाशा

रे मन ! बांधन करम पाशा ।

कालीकेँ चरण ध्यानेँ छुटै जनम् त्रासा रे मन ॥ धुन ॥

(६) भूम्नर निरुण

॥ धुन ॥ माया के संसार, यहाँ सदा कोयने रहनहार

माया के संसार ॥

ने रहला राम-श्याम, नैं अर्जुन, नैं बलराम,

भीष्म द्रोण कर्णक् नैं उबार ॥ धुन ॥

गाछ वृक्ष पशु पाखी, जे सब देखल जाय आँखी

सेहो समे काल के आहार ॥ धुन ॥

एक ब्रह्म अविनाशी, सदा सर्वत्र निवासी

“भवप्रीताक” दुर्गा नाम सार ॥ धुन ॥



(१०) भूम्नर (कृष्ण जन्म पाळा)

(छन्द) पवार

पताल में छले जते मताल असुर ।

दापरें धरती-पर जन्मल क्रूर ॥

राजा बनी करे धरम् के नाश ।

वंश बढ़ाय करे पाप विकाश ॥

पाप भारें वसुमति के जे क्लेश ।

गो रूप धरी के जाय जहाँ “हृषिकेश” ॥

कान्दी धरणी करै विपद प्रकाश ।

“माधव” कहला-करव दुख नाश ॥

लेव-जनम-हम, तोहरा ऊपर ।

नाश करव सब दनुज पामर ॥

भूम्नर

भादव राति अन्धार घोर, गरजें बादल बरषे जोर,
उमड़े-बिजुली-लहरी ।

बहे तूफान अति भयान
उखड़त तरु बलरी ।

॥ धुन ॥ कारा गृहें जनमल आजु श्री हरि
मोह रजनी मोहित प्राणी,
अचेत सहित प्रहरी ॥ धुन ॥

देवकी गर्भ सें प्रभु जनमल,
नीलमणि जित वरण श्यामल,
पीताम्बर पहिरी ।

चारि हाथ, लोकनाथ

कमल नयन छितरी ॥ धुन ॥

रूप हेरी पितु मातु चकित
करत स्तवन अन्तर प्रीत ।
शिशु कहे वाणी मधुरी,
चलहु तात ! मोहि ले साथ

गोकुल, नन्द-नगरी ॥ धुन ॥

नन्दिनी जनम दये जशोमती
मोह निन्द्रा गत, सगरो राति ।
ताहिके पाश मोही धरी ।
नन्द सुता लेव, जननी के देव

देखत ने कोइ नजरी ॥ धुन ॥

कृष्ण लये वसुदेव ठाढ़,
चिन्तित देखी जमुना बाढ़,
पार भेल एक शियरी ।
भवप्रीता गाय, वसुदेव जाय

कृष्ण राखी लेल शंकरी ॥ धुन ॥

(१२) भूम्नर छन्द (पयार)

जागी प्रहरी भोरें कंस ठोर गेल ।

नन्दिनी जनम खबर तब देल ॥

सुनेतैं कैद घर कंस जे गेल ।

जातहिं कन्या उठाय के लेल ॥

पैर धरी नभ में घुराय जे लेल ।

बध-शीला पर, पटकी जे देल ॥

छोड़ैतैं देवी उड़ि ठेकली आकाश ।

कहथीं कंस प्रति मुखे मृदुहास ॥

(१४)

भूम्नर (भादुरिया)

आकाशसेँ भगवती, पापी कंस से कहथी
दिन राति तोर काहे ई कुमलिया ?

कि दिन राति ॥

॥ धुन ॥ मोरा मारेक नही केकरो शक्तिया

कि मोरा मारेक ॥

तोरा करेले संहार, "हरि" लेला अवतार ।

गोकुला में, खेले पलना पर श्रुतिया

कि गोकुला में ॥ धुन ॥

कही हँसी खल-खल, गेली माता विन्याचल

वसी गेली जोगमाया के भूरतिया

कि वसी गेली ॥ धुन ॥

"भवप्रीता" तहाँ जाय, चरणे मस्तक नाय

"मेँदा माला", शिरेँ खसले तुरतिया

कि मेँदा माला ॥ धुन ॥

(१५) भूम्नर (भदुरिया)

देव देवी हरपित नाचे अपसरिया

बरसावे, सभी फुलवा के भरिया,

॥ धुन ॥ कि बरसावे ॥

(१५)

जत्रपुरेँ गोप गोपी आनन्दे भरिया

दही घोरी, सभी खेले पिचकरिया

कि दही घोरी ॥ धुन ॥

दही सेँ पिछरी भेल, गोकुल नगरिया

दौड़बैतेँ, खसे कतेजे सुन्दरिया

कि दौड़बैतेँ ॥ धुन ॥

"भवप्रीता" कहै हरि ! ने जाय्ह, विसरिया

भौव-सागर, तीरे, दिहा पद तरिया

कि भौव सागर ॥ धुन ॥

(कृष्ण जन्म पात्ता समाप्त)

(घाटवारी भादुरिया)

(१६) भूम्नर (कृष्ण काव्य लीला वर्णन)

अंगना में नन्द रैया, देखी देखी नितरैया

दैया नाचत कन्हैया ।

ताली देखी जशोमती मैया,

॥ धुन ॥ रे दैया, नाचत कन्हैया

भमकी ठमकी तातक थैया रे दैया नाचत कन्हैया ॥

नीलमणि लजवैया, नांगटे देहा शोभैया

देया नाचत कन्हैया ।

वधनां के धूरी धुसरीया रे देया ॥ धुन ॥

चूड़ा में मोर पांखियां, हाथें बांशुरी बलैया

देया नाचत कन्हैया ।

दाड़ा-पैरी-धुंधरु पिन्हैया रे देया ॥ धुन ॥

“वेदांत”-कै-नीचोरैया, नाचे भूवन गोसैया

देया, नाचत कन्हैया ।

भवप्रीताक नैया खेपैया रे देया ॥ धुन ॥

(१८५) भूस्वर (दड़ कुमरा)

नंद के छयला कृष्ण वयसें नवीन गो

बजावये, बंशी पैशी विपिन गो

बजावये ॥ बंशी...

प्रेम चारा गांधी बंशी, फेकले गोविन् गो

चारा लोभें, बाझि गेले मन मीन गो

चारा लोभें ॥ धुन ॥

बंशी संगे टानी मोही-आनी निज ठीन गो,

निज जन सती करि देल मीन गो

निज जन ॥ धुन ॥

“भवप्रीता” कहे युगल मिलन रंगीन गो

ब्रह्म संगे, माया भये गेले लीन गो

ब्रह्म संगे ॥ धुन ॥

—•—

(१८६) भूस्वर (गोपिनी द्वारा कृष्ण रूप वर्णन)

॥ धुन ॥ त्रिमंग मूरति सोहाने मे दूती !

श्यामली मूरति सोहान ॥

नील कमल वदन, भोंआ धनुका जैसन ।

नैना से मारे हियां बाण मे दूती ॥ धुन ॥

नील अंगे पीताम्बर, मेघे-विजुली-सुन्दर,

बिहुँसी के छीने नारी प्राण मे दूती ! ॥ धुन ॥

देखी के रूप विलास, ने मिटे आंखी पियास,

“भामिनी” तेजे अभिमान मे दूती ॥ धुन ॥

ब्रज बधु बधे लागी, बंशी टेरे राति जागी,

“भवप्रीताक” हरि पदे ध्यान मे दूती ॥ धुन ॥

(१७) भूम्नर (माडुनिया) कृष्ण लीला



सांभे गेलों भरे पानी,
 तहां आवे निलमणि
 बीच घाटे करे भिका भोर,
 ॥ धुन ॥ सखि रे, बड़ी हठी 'कालिया किशोर' !
 बड़ी हठी कालिया किशोर
 सखि रे ! बड़ी हठी कालिया किशोर ॥
 बुझालें ने बुझे बात, दिये चाहे देहें हाथ
 शिरके गगरी फोड़े मोर
 सखि ! शिर के गगरी फोड़े मोर ॥ धुन ॥
 दौड़ी कें गेलों पराय, पीछु दौड़ी लपटाय
 देल मोर बहिया मरोर
 सखि ! देल मोर बहिया मरोर ॥ धुन ॥
 हेरी किशोरी किशोर, "अवप्रोता" प्रेमे भोर ।
 चन्दा हेरी जैसन चकोर
 सख, चन्दा हेरी जैसन चकोर ॥ धुन ॥

(१८) भूम्नर (दांड भूम्नर) कृष्ण लीला

बड़रू खोजेल गेलों सांभे बथान
 रे कदम तर ।
 ॥ धुन ॥ पाछु आवि श्याम लपटान रे कदम तर
 चोलिया धरी कन्हैया, देल जोरें टान
 रे कदम तर ।
 हार टूटी मोती छीतरान रे कदम तर ॥ धुन ॥
 छीनबो मूरली कान्हा ! चुरबो गुमान
 रे कदम तर ।
 जशोदा से सिखाबो विहान, रे, कदम तर ॥ धुन ॥
 तयो नही छोड़ै कान्हा मुहें मुसुकान
 रे कदम तर ।
 भवप्रीताक युगल पदें ध्यान
 रे कदम तर ॥ धुन ॥

(१९) भूम्नर (दांड भूम्नर)

सांभे बेरी बीच घाटे थाड़े नीलमणिया
 कैसें जावे, नीर भरेले सजनिया
 कैसें जावे ? ॥ धुन ॥

गेलें सभी सोभे श्याम करे छेड़ खनिया
 नहीं राखे-लाज, ने छोड़े शैतनिया ।
 ॥ धुन ॥ नहीं राखे-लाज, ने छोड़े शैतनिया ।
 तोड़ी देत चोली बन्दा, छीनते ओढ़निया
 से हो देखी रे, हँसते सभे जनिया
 से हो देखी, हँसते सभे जनिया ॥ धुन ॥
 भवप्रीताक हे राधे, राखूँ मोर बाणिया
 भरी लिहा, सुखें श्याम प्रेम पनिया,
 भरी लिहा सुखें श्याम प्रेम पनिया ॥ धुन ॥

(२०) भ्रूमर (दाँड़ भ्रूमर) एक ब्रज बाजा के उद्गार

तिरिया जनम जों देभे गोसैयां लाल ।
 दिहा देवा रे !
 कन्हैया ऐसन पिया लाल दिहा देवा,
 ॥ धुन ॥ रे, कन्हैया ऐसन पिया लाल दिहा देवा
 तिरछी नजरी दिहा, मोहिनी हँसिया लाल
 दिहा देवा रे,
 पीरिति भरल हिया लाल दिहा देवा !
 रे, पीरिति भरल हिया लाल दिहा देवा ॥ धुन ॥

पतरी कमरी दिहा नामी जे केसिया लाल
 दिहा देवा ! रे,
 योवना जैसन कीया लाल दिहा देवा !
 रे, योवना जैसन कीया लाल दिहा देवा ॥ धुन ॥
 “भवप्रीता” कहे हरि ! राधा संगें लिहा लाल
 होय्हा देवा !
 मोर अन्तर बसिया लाल होय्हा देवा
 रे, मोर अन्तर बसिया लाल होय्हा देवा ॥ धुन ॥

(२१) भ्रूमर (कुमटा)

मोहन जी के हँसीया कि मोहन जी के बँसीया
 मोहन जी के हँसीया कि मोहन जी के बँसीया
 दुहू डारें,
 जे गोपिनि गरें कँसिया कि
 दुहू डारें... ॥ धुन ॥
 नैना तिरछिया कि कदम्ब बिरछिया
 नैना तिरछिया कि कदम्ब बिरछिया
 दुहू मारे—
 नारी हियरां बरछिया कि
 दुहू मारे ॥ धुन ॥

शामली सुरतिया कि कपट पीरितिया
शामली सुरतिया कि कपट पीरितिया

दुहूँ नाशें—

रे, कामिनी कुल जतिया कि

दुहूँ नाशें ॥ धुन ॥

“भवप्रीताकू” मतिया कि “भवप्रीताकू” गतिया

दुहूँ करेँ ।

युगल चरणेँ वसतिया कि

दुहूँ करेँ ॥ धुन ॥

(२२) भ्रूमर (कुमटा) कृष्ण छीळा

गेलों गगरीया ले जमुना किनरिया ।

गेलों गगरीया ले, जमुना किनरिया ।

कदम तरेँ ।

॥ धुन ॥ छैला बँसीया बजावे, कदम तरेँ ॥

बँसीया बजावे कि हँसीया देखावे,

बँसीया बजावे कि हँसीया देखावे,

नयना-वाणे !

मोर हिया जे डोलावे, नयना वाणे ॥ धुन ॥

विनतीं रिभावे कि पीरिति बुभावे

विनतीं रिभावे कि पीरिति बुभावे

निकुँज बने—

सांभेँ मिलेले बोलावे, निकुँज बनेँ ॥ धुन ॥

“भवप्रीता” गावे कि हरि से मनावे ।

“भवप्रीता” गावे कि हरि से मनावे,

चरण नैया—

जैसेँ आखिरी पावे, चरण नैया ॥ धुन ॥

(२३) भ्रूमर (कुमटा) (गोविनीकू विरह वेदना)

मेघा घहरावे कि पानी बरपावे,

मेघा घहरावे कि पानी बरपावे

॥ धुन ॥ बन्धुआ लागि, राति जीहा तरसावे

भलके बिजुलिया कि कुहूँ के कोयलिया

पपीहा पापी—

पिया पिया सुनावे, पपीहा पापी ॥॥ धुन ॥

पिया मन भावे कि मदन सतावे,

पिया मन भावे कि मदन सतावे

उमड़े रसेँ ।

मोर योवना पीरावे उमड़े रसेँ ॥ धुन ॥

फूलेँ गुंजे भौरा कि डारी नाचे मोरा
 फूलेँ गुंजे भौरा कि डारी नाचे मोरा
 भवप्रीता

हरि-चरणें लोटावे कि भवप्रीता ॥ धुन ॥

(२८) भूम्नर (भादुरिया) कृष्ण लीला
 नन्द के गैया चरैया, गोपिन के पकरवैया,
 ॥ धुन ॥ दैया, बंशी के बजैया !
 लोति-लोति थाड़े कदम छैया रे दैया ॥ धुन ॥
 ॥ धुन ॥ बंशी के बजैया

निपटे निठुर कान्हूरैया रे दैया ॥ बंशी के
 संगमें बलराम भैया, दुयो बड़ी निरदैया
 दैया, बंशीके बजैया ।
 नारी दुख नहीं, बुझवैया रे दैया ॥ धुन ॥
 लपकी धरे कलहैया, छोड़ालों ने छोड़वैया
 दैया, बंशी के बजैया ।
 बिन वीहां बने चाहे सैया रे दैया ॥ धुन ॥
 “भवप्रीता” के रखवैया, तोहीं कुमर कन्हैया,
 दैया, बंशी के बजैया ।
 आखिरी राखिह अपन पैया रे दैया ॥ धुन ॥

(२९) भूम्नर

कदमा के डारे चढ़ि बोले कोइलिया
 ॥ धुन ॥ ताहिं तरें, नागर बजावै
 बंशुरिया कि ताहि तरें ॥

गरजी बरषे मेघा, चमके बिजुलिया
 कि नाचे मोरा,

खोली पुछके टिकुलिया कि नाचे मोरा
 भौरा गुंजरे चुमि नवफूल कलिया
 कि मह-मह !

करे चम्पा चमेलिया कि मह-मह ! ॥ धुन ॥
 “भवप्रीता” हृदि बीचें राधा अलबेलिया
 संग लये,
 नाचे मोहन शामलिया कि संग लये ॥ धुन ॥

(३०) भूम्नर (चटवारी भादुरिया) कृष्ण लीला
 ठीके रे, संकोती बेरी, बटिया भेटला हरि
 बहीयां धरे मरोरी,
 अखियां सें करे चित्तचोरी,
 ॥ धुन ॥ देलथीं गगरी फोरी ।

टानी देला चोली बन्दा तोरी ।

देलथीं गगरी फोरी ॥

लाजें आंखि गेल भरी, बुझावलों कते करी,
एकोने सुनथी मोरी ।

गियारीं लगाये भीका भोरी ।

देलथीं गगरी फोरी । ॥ धुन ॥

तनी भेलों आगुसारी, तुरते लपकी हरि,
कलशी निशान धरी ।

मारी देला पथरा बलोरी

देलथीं गगरी फोरी ॥ धुन ॥

भवप्रीता प्रेम भरी, हरि पदे ध्यान धरी,
गावथीं कर जोरी ।

वसी गेला चितें युमल जोरी ।

देलथीं गगरी फोरी ॥ धुन ॥

(२७) भूकम्बर (भादुरिया) कृष्ण-लौडा

शीतल जमुना वारी, सहेली संगती जोरी,
नहावे छलों उधारी ।

चुपके सें वस्तरा बलोरी, चढ़ला कदमा डारी ।

॥ धुन ॥ चिरसंगें चितकरि चोरी,

चढ़ला कदमा डारी ॥

पानी में छाया निहारी, ताकलों ऊपर धरी,
डारी परें धरी सारी ।

चिहुंसी ताकथि बनवारी ॥ धुन ॥

मांगलों विनती करि, मुसकी कहथीं हरि ।

लेहो वस्त्र कर जोरी,

ऐसन कण्ठ हठकारी ॥ धुन ॥

“भवप्रीता” कहे गोरी, लेहो चिर हथा जोरी,
प्रभु सें कि लाज भारी ?

हुनी घट-घट बसवारी ॥ धुन ॥

(उनके शिरजल देहा नारी)

(२८) भूकम्बर (भादुरिया)

सांझ गेलों जमुना अकेली-जनिया

रे, एकेली जनिया ।

॥ धुन ॥ आबी एकेतनिया, धरे निलमणिया

पैया पड़ो कान्हा, ओढ़े दे ओढ़निया

ओढ़े दे ओढ़नीया ।

छाड़ि देहो बहियां-रे, भरव पनिया ॥ धुन ॥

फूटले गगरीया, टूटले कंगनिया,
 टूटले कंगनियां ।
 कि कहत सुनिया, सासु ननदिनिया ? ॥ धुन ॥
 “भवप्रीता” कहे तोही, विनोदिनिया,
 तोही विनोदिनिया
 सभि गेले जानिया, श्याम सोहागिनिया ॥ धुन ॥

(२६) भूम्नर (गोपिनोक् प्रेम वर्णन)

दये वंशी सिंधकाठि, हृदय भंडार काटि
 कालिया किशोरा, कपट किशोरा ।
 चित चोरावले चित चोर रे ।
 ॥ धुन ॥ कालिया किशोरा, कपट किशोरा ॥
 तोरेने निरखी छन, आंधार लागे भूवन,
 कालिया किशोरा ।
 मेघा जोखें भरे आंखि लोर रे ॥ धुन ॥
 चन्द्र मुख नाहि हेरी, धीरज बांधे ने पारी
 कालिया किशोरा,
 लुबधले नयन चकोर रे ॥ धुन ॥

“भवप्रीता” कहे हँसी, मोर हृदि कुंजें पैशी
 कालिया किशोरा,
 राधा संगे करह किलोर रे ॥ धुन ॥

(३०) भूम्नर (वसन्त रात्रि वर्णन)



॥ धुन ॥ चाननी सोहान मधु निशि, शशि उगे हँसी,
 चाननी सोहान मधु निशि ।
 हेरी एहो शोभा राशि, हँसी उठे दशो दिशि
 यमुना बहती हँसी हँसी- शशि उगे हँसी ॥ धुन ॥
 नाची नाची मोर हँसे, गोपिनी गोपाल हँसे,
 कुमुदिनी हँसे जलें पैशी शशि उगे हँसी ॥ धुन ॥
 आमके मंजरा हँसे, भौरा गुंजरें हँसे,
 चकोरा चकोरी मुँहे हँसी, शशि उगे हँसी ॥ धुन ॥
 हँसे श्यामराय रूपसी, भवप्रीताक् चितें हँसी,
 जे हँसी मिलावे अविनाशी, शशि उगे हँसी ॥ धुन ॥

(३१) भ्रूमर (गोपनीक प्रेम वर्णन)

तोहरो आवे के आशें रहलों जे कुंज वासैं,
मोहन तोरे लागी ।

रतिया खेपलों जागि-जागी ।

मोहन तोरे लागी

चन्द्रावली कुंजे गेला भागी,

॥ धुन ॥ मोहन तोरे लागी ।

मदनके फूलशरें, मोर मरम विदरें,

मोहन तोरे लागी ।

जारे देहा बिरहके आगि ।

मोहन तोरे लागी ॥ धुन ॥

जेकर तोहें अनुरागी, सेंहो चन्दा बड़भागी,

मोहन तोरे लागी ।

हमरा कें बनान्है अभागी ॥ धुन ॥

भवप्रीता कहे हरि ! अन्तें दिहा पदतरी,

मोहन तोरे लागी ।

अधम जानीने दिह त्यागी ॥ धुन ॥

(३२) भ्रूमर (भादुरिया) राधाक मान

चन्दा संगें रस रंगें रतिया विताय

॥ धुन ॥ भोरक बेरियां रे बन्धु !

यहां काहे आय ?

निशि जागरण आलसैं चरण टलाय,

नींदें अखियां रे बन्धु !

भियो भिपी जाय ॥ धुन ॥

पान पीकें गला तौर के देलो रंगाय ?

नवीन मेधिया रे बन्धु !

अरुण शोभाय ॥ धुन ॥

कजरा सिन्दुरा घामें, मुंहा भलकाय

तीर-बैरिया रे बन्धु !

भले वही जाय ॥ धुन ॥

भवप्रीतां कहे राधा, बोलोरिसियाय

जाहो फिरिया रे बन्धु !

चन्दा रुसी जाय ॥ धुन ॥

(३३) भ्रूमर (भादुरिया)

सुनी कें मुरली ध्वनि, चिहुकि उठलि धनि,

सुतली जे छली घोर नींद में ।

॥ धुन ॥ रे, बांसी ! बाजे विपिन में ॥
 कल न पड़त निशिदिन में ॥ धुन ॥
 राधा कहे सुन शखी मिलाह कमल आंखी,
 अब ने जीयवे श्यामक भीन में ॥ धुन ॥
 विनूँ से चीकन काला, अन्तर उपजे जाला
 जैसे जाला पानी विनूँ मीन में ॥ धुन ॥
 भवप्रीता कहै हरि ! अन्ते दिह पद तरी,
 ने भेजिहा शमन अधीन में ॥ धुन ॥

(३३) भूम्बर (कृष्ण लीला)

जमुना में जल भरी, जाय छलों घर फिरी,
 दूती ! ने बुझये बतिया ।
 घाट रोकि छुए चाहे छतिया रे दूती !
 ने बुझये बतिया ।
 ॥ धुन ॥ “मोहन” बड़ी उत्पतिया रे दूती !
 ने बुझये बतिया ॥
 एके जे, सँभोती बेरी, सिर बो कांखे गगरी
 दूती ! ने बुझये बतिया ।
 मोरा नहिं कोइ संग सथीया रे दूती ॥ धुन ॥

लपकी लेल पकरी, भांगल दूयो गगरी,
 दूती ! ने बुझये बतिया ।
 आवे ने चले एको जुकतिया रे दूती ! ॥ धुन ॥
 युगल मिलन हेरी, भवप्रीता प्रेम भरी,
 दूती ! ने बुझये बतिया ।
 पैरीं तरें खसल धरतिया रे दूती ! ॥ धुन ॥

(३४) भूम्बर (बांशी महिमा)

बांसु के बांशुरिया रे, बड़ी गुण तोर रे ।
 ॥ धुन ॥ हां रे, बांशी ! नाशले जाति कुल मोर रे ॥
 तोरे शबदे बांशी ! भेले मति भोर रे ।
 हां रे, बांशी ! चितेंजागे, कालिया किशोर रे ॥ ॥ धुन ॥
 मना उचटावे रे, योवना करे जोर रे ।
 हां रे, बांशी ! छटदे टपके नैना लोर रे ॥ धुन ॥
 भवप्रीता कहे बांशी ! होये गेले शोर रे ।
 हां रे बांशी ! मोही बांशी राधा चित चोर रे ॥ धुन ॥

(३५) भूम्बर

॥ धुन ॥ बांशुरिया ! तान में जोड़ले कैसें वाण ? २ ॥
 बांसु के बांशुरी तोंहें, नहीं आंखि कान,
 बांशुरिया तैयो कैसें अचूक निशान ! ॥ धुन ॥

छीनले मदन सें कि भेंटलो दान ?

बांशुरिया, जही फूल बाणें ई गुमान ॥ धुन ॥

शब्दें मिलाये तीरा, करे वरिषान,

बांशुरिया, ले ले कत्ते अचला परान ॥ धुन ॥

शब्दें ब्रह्म मिलावये, कृष्ण भगवान्,

बांशुरिया, भवप्रीताक् हरि पदें ध्यान ॥ धुन ॥

(३७) भ्रूम्भर (भादुरिया) राधाक् प्रति कृष्णक् प्रेम वर्णन
राधे ! तोर प्रेमें मजी, गोकुलां राखाल साजी ।

जीवन किशोरी !

गो चराये फिरी जे विपिन गो ।

॥ धुन ॥ तयो तोर दरश कठिन गो

जीवन किशोरी ।

भरमें मूरति आंका, मोर पांखा राधा लेखा

जीवन किशोरी !

नाम रटे बांशी निशि दिन गा,

दयाकर, जानीके अधीन गो ॥ धुन ॥

तोंहीं जीवन संगिनी, तोंहीं प्रेम तरंगिणी

जीवन किशोरी !

हम तोर प्रेमे पानिक् मीन गो

तोहरे विरहें देहा खीन गो ॥ धुन ॥

खमाकरी संगे हरि, करिहि करुणा करि ।

ब्रजेन्द्र किशोरी ।

चिदानन्दें अवप्रीतालीन गो ।

एकमेव द्वितीय विहीन गो ॥ धुन ॥

(३८) भ्रूम्भर

कामिनी कुंतल जाल, सेहो जाल महाजाल,

बाभी गेलो, बाभी गेलो गे, धनी !

॥ धुन ॥ रसिका नागर कि बाभी गेलो ॥

कटाक्ष भ्रूंग रंगें, अनंगके बाण संगें,

मारि देली, मारि देली गे धनी !

हरिणा समान बाणें मारि देली ॥ ॥ धुन ॥

देखाये मधुर हाँस, लगाली पीरिति फाँस,

बान्धी लेली, बान्धी लेली गे धनी !

चोराके समान, पाशें बांधी लेली ॥ धुन ॥

अलिके कमल मधु, चकोरा के जैसन विधु

मोरा लेखें; मोरा लेखें; गे धनी !

तहूँतें तैसन कि मोरा लेखें ॥ धुन ॥

(३६) भूम्बर (वर्षा आगमन)

वरपा ऋतु मंत्री आज, राजा भये मदन राज,
समर को पधारे ।

समर आश, विरही नाश, दादुर हलकारे,
॥ धुन ॥ वाजत धन मदन के नगारे ।

वरपत् वृन्द सायक खरधारे ॥
विजुली तलवार जान, देत वीर सघन शान,
विरही हिया फारे ।

चातक पिक गुण अधिक गावत सुख सारे ॥ धुन ॥
साजत सैन्य चारि ओर, शंख ध्वनि करत मोर,
झिगुर के पहारे ।

आयुधकुल विविध फूल, विरही को सहारे ॥ धुन ॥
रण विचारि अति दुरस्त, रवि-शशि उभय अस्त
मेघ पहुचारे ।

चकित प्राण हरि के गान "भवप्रीता" उचारे ॥ धुन ॥

(३७) भूम्बर (गोपिनोक्त प्रेम वर्णन)
दूती ! पनिया वरपे, झिगुर झंकारे प्राण
॥ धुन ॥ ने रहत वशे, दूती, पनिया वरपे ॥

राति अंधारी घोर, विजुली चमके जोर,
दूती ! पनिया वरपे ।

मेघा गरजे मौंरा कुहके हरपे ॥ धुन ॥
एकसरी लागे डर, हिया काँपे भर-थर,
दूती ! पनिया वरपे ।

निन्दो नाही विनू श्याम सरस परशे ॥ धुन ॥
केतकी चापा बकूल, कूटे कत्त मत फूल
दूती ! पनिया वरपे ।

पपीहा के पिया डाकें जीहा तरसे ॥ धुन ॥
विरह बेकल प्राण, मदने हानत बाण
दूती, पनिया वरपे ।

"भवप्रीता" युगल रूप उरसें दरशे ॥ धुन ॥
(३८) भूम्बर

गरजे बदरिया कि विजुली लहरिया
हो राम ! राति अंधरिया ।
॥ धुन ॥ रिमी झिमी वरपये भरिया हो राम !
राति अंधरिया ।

कैसें जायवे एकसरिया हो-राम ?
राति अंधरिया ।

जमुना किनरिया कि कुंज भीतरिया, हो राम !

राति अंधरिया ।

मोहन बजावे जे बांशुरिया हो राम ॥ धुन ॥

सुनिकें बांशुरिया कि चित् बडरिया हो राम !

राति अंधरिया ।

दँशँ विरह विपधरिया हो राम ॥ धुन ॥

राति अंधरिया ।

इ भव सागरिया कि बड़ी भयंकरिया हो राम !

राति अंधरिया ।

“अवप्रीता” मांगें पदतरिया हो राम ॥ धुन ॥

राति अंधरिया ।

(कैसें तरवे विनूँ तरिया हो राम)

(३२) भूस्मर (भदवारी) राधा के प्रेम वर्णन

सपना सगुण देखी, हरपी उठली सखी,

दूतीसे कहथीं बतिया ।

फरकी उठली वाम अँखिया,

॥ धुन ॥ आजुरे, आवते कालिया ।

उरखी बांधली जुरा लगावली पानक् बीरा
विछावली भारी सेजिया ।

जागि रहली धनी रतिया ॥ धुन ॥

श्याम शवद सुनी, चमकी उठली धनी,
मिलली आगु लागिया ।

प्रेमें छल-छल चारी अँखिया ॥ धुन ॥

अंग परश सुखें, भूरछिता पति बुकें,
मुखसैं ने फुटे बतिया ।

भवप्रीता भावे वनमलिया ॥ धुन ॥

(३३) भूस्मर (भादुरिया)

सुनी बांशुरी शवद, हियां उठले दरद
राम ! गेलो कुंज गलिया ।

बीधे तीरें मदन खेअलिया हो राम !

गेलों कुंज गलिया ।

॥ धुन ॥ मिले लागी मोहन शामलिया हो राम !

गेलों कुंज गलिया ॥

गरजे वरषे घन, एकेली डरावे मन ।

राम ! गेलों कुंज गलिया ।

रही रही छटके विजुलिया हो राम ।
 गेलों कुंज गलिया ॥ धुन ॥
 फूलले कदम फूल, सौरभेंजे मारे शूल
 राम गेलों कुंजगलिया ।
 नाचे मोरा कुहके कोयलिया हो राम ।
 गेलों कुंज गलिया ॥ धुन ॥
 खोजनों राति सगर, कहूं ने मिले नागर
 राम ! गेलों कुंज गलिया ।
 अवधूती चिते बनमनिया हो राम ।
 गेलों कुंज गलिया ॥ धुन ॥



(४४) झूमर (धादबारी दांड झूमर)

चांद मुहें धीर हँसी, गीयारी नगाय फांसी,
 ई केकरी बहुआरी ?
 ॥ धुन ॥ नैनासे तीरा दिये मारी ।
 ई केकरी बहुआरी ?
 गोर देहें सोभे नील सारी
 ई केकरी बहुआरी ?

एक धरे माथ परें, दूसरे कखीया धरे,
 ई केकरी बहुआरी ?
 छाती परें धरे दु गागरी ।
 ई केकरी बहुआरी ॥ धुन ॥
 केशा कमरी लोटाय, नाकें वेसरी सोभाय,
 ई केकरी बहुआरी ।
 जेवरा झलके बलिहारी ॥ धुन ॥
 ताकेयते जुगल जोरी, अवधूती कर जोरी,
 ई केकरी बहुआरी ?
 खसे पैरी आंखी प्रेमवारी ॥ धुन ॥

(४५) झूमर

फुटे कदम बन अरु केतकी बन
 छाया बटा घन शावन के ।
 अब रति नायक, ले फूल सायक
 मारन लागे विरही जन के ॥
 ॥ धुन ॥ वरपाने तरसावत जीहरा
 सखी रे ! विनु मनमोहन के ।

टपकत बुंदन नाचे शिखी गण
 कुहकत कोकिल कुंजन के ।
 दमकत दामिनी पिऊ विनूँ कामिनी
 विलपत यामिनी जापन के ॥ धुन ॥
 पपीहा दादुर डाहुक भींगूर
 करत शोर चहुँ ओरन के ।
 कल-कल नादिनी बहुत तरंगिणी
 बहत भिकोरा सुपवन के ॥ धुन ॥
 इ सुख रजनी दरश ही सजनी
 जिहा चाहत पिऊ मिलन के ।
 भवप्रीता गति श्री राधापति
 मति आश्रित हरिचरणन के ॥ धुन ॥

(४३) भूम्बर (कुपटा)

लटकै शावन घन हेरी उचटे मन
 कुहकत वन-वन मोर, ए राम !
 शूल भवन बीचें दामिनी छन-छन
 ॥ धुन ॥ दमकत छार्द चहुँ ओर, ए राम !

पापी पपीहरा पिऊ पिऊ बोलै
 सुनी शाले हिया मोर, ए राम !
 पवन भीकोरें वन-तरु वर डोले
 वरषे गरजी घनघोर, ए राम ! ॥ धुन ॥
 राति अकेली डर लागे सेजिया पर
 प्रीतम नहीं घर मोर, ए राम !
 मारे मदन शर वेकल अन्तर
 वाला योवना करे जोर, ए राम ॥ धुन ॥
 जल तट दादुर भींगूर बोले
 सारस करत अनोर, ए राम !
 "भवप्रीता" तनमन ओ नयन बीच
 खेलत नन्द किशोर, ए राम ॥ धुन ॥

(४७) भूम्बर

सजनि सुनु वचन, चित भेला उचाटन
 बाजे घन बँशी-बँशीधर के
 ॥ धुन ॥ राति दुपहर के ॥
 वरषे शावन राति, निपटे अंधार अति
 कैसें दूती ! देखव नागर के ?
 राति दुपहर के ॥ धुन ॥

बिनुँ माधव मिलन, आवे ने रहे जीवन,
मदन दहन फूल शर के,
राति दुपहर के ॥ धुन ॥
द्विज भवप्रीता भने मोर हृदि चन्दावनेँ
रास लीला राधा राधा वर के ।
राति दुपहर के ॥ धुन ॥

(४८) भूषणर (मूलन पाळा) बंगला मिश्रित
— त्रिपदी —

आहा ! कि माधुरी आवन शर्वरी
ताहे शुक्ला एकादशी ।
कुंज मध्यस्थले, नीप डाले दोले
श्याम कोले राय रूपसी ।
सखिरा दोलाय, चामर दुलाय
मुखे गाय प्रेम गीति ।
युगल मूरति हेरी सह रति,
रतिपतिर अधोगति ।
भलकत मरकत, दुह जन अंग,
जड़ित इन्द्र नील हिरक संग ।

रूप द्युति चमकत, मंजुज कुंज
गुंजत भ्रमर चुमि फूल पुंज
पियु-पियु कुंजत पपीह विहंग ।
उथलत मन्मथ सिन्धु तरंग

(४९) भूषणर (मूलन)

आकाशें बारि पतन, कुंजे प्रेम वरिषन
सखि ! रसीक रंगीया ।
बांशुरी जार अधर संगीया रे सखि !
॥ धुन ॥ रसीक रंगीया ॥
राधा सगें दोले त्रिमंगीया रे सखी !
रसीक रंगीया ॥
आकाशे मेघ गर्जन, कुंजे मूरली गुंजन
सखि ! रसीक रंगीया ।
अपरूप शोभार मंगीया रे सखी ! ॥ धुन ॥
आहा ! कि शोभा निरखी गिरि शृंगें नाचे शिखी
सखि ! रसीक रंगीया ।
कुंजें नाचे गोपी विहंगीया रे सखि ॥ धुन ॥

मेघ कोले सोदामिनी, श्याम वस्त्रे विनोदिनी
सखि ! रसीक रंगीया ।

रहे परस्पर आलिंगिया रे सखि ! ॥ धुन ॥

चारि चरण कमले, मधु लूटे कुतूहले
सखि ! रसीक रंगीया ।

“अवधूतीतार” से मन धिंगिया रे सखी ॥ धुन ॥

(८९०) भूस्मर (भूजन)

राधा संगे भूले श्याम रूपे हारे रति काम
लागे भूला निकुंज भीतर में—

॥ धुन ॥ मूरली अधर में ॥

भूलावे ब्रज सुन्दरी, ढुलावे चौंवरा धरी,
कंगना भंकारे हाथा पर में,
विजुली नजर में ॥ धुन ॥

डारी नाचे मौरी मौरा, फूल में गुंजरे मौरा,
मधु भरै पपीहा के स्वर में
कोकिला कुहर में ॥ धुन ॥

युगल रूप माधुरी, हेरी के नयना भरी,
अवधूती आनन्द अन्तर में,
खसे पैरों पर में ॥ धुन ॥

(८९१) भूस्मर (भूजन)

सावन निशि विमला, वृन्दावने प्रेम लीला
भुलावये जते गोपी कुल,

॥ धुन ॥ दोले राधा श्याम प्रेमाकुल ॥

यमुना पवनान्दोले, दोले तरंग हिज्जलोले

डाले दोले मयुरा मंजुल ॥ धुन ॥

मेघते विजुली दोले, पुष्पलता तरु कोले

दोले रे; अमर धरी फूल ॥ धुन ॥

“अवधूती” ॥ हृद् कमले, किशोर किशोरी दोले

बहे प्रेमा-नील-अनुकूल ॥ धुन ॥

(८९२) भूस्मर (राधाकृष्णविरह वर्णन)

सुनिया सघन मुरली तान हरि प्रेमाकुल भेल पराण
विसरल सुधि घर के ।

विनू श्री श्याम दहत काम वरपा कूल शर के
॥ धुन ॥ बाजत धन बंशी, बंशीधर के

नागर के, नटवर के, गिरिधर के ॥

वरषे भयान भादव राति, सघन चमके विजुली बाति
गरजन जलधर के ।

विनूँ गोविन्द नाहिक निन्द,
 सेज सम विषधर के ॥ धुन ॥
 लइया मालती मधुर गंध, बहत पवन मन्द-मन्द,
 गुँजन मधुकर के ।
 दारुण पपीहा रटे पिया-पिया
 उरसे पीर जहर के ॥ धुन ॥
 सारस करत सरस गान, प्रेम रस विनु तरसे प्राण,
 सुरति रसिक वर के ।
 भवप्रोता मन चंचरीक येन
 कमल पद सुन्दर के ॥ धुन ॥

(५३) भूम्नर (मदबारी)

॥ धुन ॥ भादव अंधारि भयंकर, राति लागे डर ।
 बदरा गरजै घोर मोरा बोले कठोर,
 सूप धारें भरै जलधर
 राति लागै डर ॥ धुन ॥
 निकुंजें नाहीं नागर मदनै हानत शर
 दंग्गो विरह विषधर
 राति लागे डर ॥ धुन ॥

मोही बियोगिनी पावी, देखावे संयोग छत्री,
 फूले बैठी निलज अमर
 राति लागे डर ॥ धुन ॥
 पीऊ कहाँ कही-कही उपहास करे मोही,
 निदारुण पपीहा पामर
 राति लागे डर ॥ धुन ॥
 भवप्रोताक हृद कमलें खेलें सदा कुतूहलें
 राधा संगें राधा मनोहर
 राति लागे डर ॥ धुन ॥



(५४) भूम्नर (बेल पत्र के प्रति)

हरीहर गाल्लें मौरा, हरीहर अंगिया,
 दरीहर शोभे सुगिया बिहंगिया गो । हरिहर.....
 हरीहरे नील मेघ तरंगिया गो ॥
 हरीहर तीरें पीये, हरीहर भंगिया ।
 हरीहर रंगें मन गेल रंगीया गो ॥ धुन ॥
 हरीहर प्रेमे मन उमंगिया ।
 हरीहर बेलपत्र तोड़े सभे संगिया ।

नहीं डरे हेरी बाधिनी भुजंगिया गो
बनी गेले समे नन्दी भिरिंगिया गो ॥ 'बनि' गेले...
अवधूतीक हृदि कीचें उमा अरधंगिया
नाचे भोला जटौ उमड़ये गंगिया गो ॥ नाचे...

(८५८५) भूस्मर (राधाक विरह वर्णन)

सुनिया सघन मुरली तान हरि प्रेमाकुल मेल पराण
विसरल सुधि घर के ॥
बिनुँ श्रीश्याम दहत काम वरपा फूल शरके
॥ धुन ॥ बाजत घन बंशी, बंशीधर के
नागर के, नटवर के, गिरिधर के ॥
वरपे भयान भादव राति सघन चमके बिजूली वाति
गरजन जल - धर के ।
बिनुँ गोविन्द नाहिक निन्द,
सेजसम विषधर के ॥ धुन ॥
लइया मालती मधुर गंध, बहत पवन मन्द-मन्द
गुँजन मधुकर के ।
दारुण पपीहा रटे पिया-पिया

उरसे पीर जहर के ॥ धुन ॥
सारस करत सरस गान, प्रेम रस बिनु तरसे प्राण
सुरति रसिक वर के ।
अवधूती मन चचरीक जेन
कमल-पद सुन्दर के ॥ धुन ॥



(८५८६) भूस्मर (भादुरिया)

भादव घोर रजनी हमें कुंजें एकाकिनी हे,
मधुर मधुर सुरें बाजे बांसिया
॥ धुन ॥ सखि ! साले मोर दीया ॥ मधुर.....
मेघा घन गरजे रिमि किमि वरषये हे,
कोकिला के कुहुस्वरें जारे अँगिया ॥ धुन ॥
केतकी सौरभ बाण, मदने साधे निशान हे,
पीऊ पीऊ रटे राति पापी पपीहा ॥ धुन ॥
द्विज अवधूती भने माधव अन्तिम खने हे,
उवारीहा भौ सागरें दीने करी दया ॥ धुन ॥

(८५७) भूम्नर (भादुरिया)

वरपे भादव राति दिशि ने सुभाय

॥ धुन ॥ विनूँ बन्धुआ रे सखी ! चित अकुलाय ।

विजुली छटकै छने मेघ गरजाय

आधि रतिया रे सखी ! मदन सताय ॥ धुन ॥

मौरा कुहक सुनी अबला डराय,

कारी कोलिया रे सखी ! जीहा जराय ॥ धुन ॥

गमके मालती फूला बहे पूरबाय

फूल सेजिया रे सखी ! मोहि ने सहाय ॥ धुन ॥

भवभीता राधाकृष्ण चरण घेयाय

युगल छविया रे सखी ! झलके दियाय ॥ धुन ॥

(८५८) भूम्नर (भादुरिया) छन्द मिश्रित

— अभिसार वर्णन —

छन्द

विरहिनी नारी उमर किशोरी

भादव राति अंधारी (हो)

भादव राति अंधारी

निन्दो ने आवे मदन सतावे

तापर आफत भारी (हो)

तापर आपत भारी ।

(भादुरिया) मूमर

बाजे मोहन बँसुरिया भिंजी चुनरी ।

गोरी वरपे बदरिया भिंजी चुनरी ॥ धुन ॥

(छन्द)

सुनिके बांसुरी मति भई बाबरी,

चित बसी गये मुरारी (हो)

चित बसी गये मुरारी ।

चलूँ वही वन, जहां मन मोहन

श्याम बँसुरिया धारी [हो]

श्याम बँसुरिया धारी ।

(भादुरिया) मूमर

मोहि ने सुभे डगरिया भिंजी चुनरी ॥

नैना भरे जैसे भरिया भिंजि.....

(छन्द)

मलका मलके बटिया झलके

फिर तो वही अंधारी (हो)

फिर तो वही अंधारी ।

चरण चलेना रहत बनेना ।

त्रिशंकू दशा हमारी (हो)

त्रिशंकू दशा हमारी ।

(भादुरीया) मूमर

डर लागे एसकरीया सुधि बिसरी

शांकरी कुंज गलीया भिजि चुनरी ॥

नैना भरे जैसेँ भरिया भिजि चुनरी

(छन्द)

राति बीच मग ठाढ़ी अचल पग

श्री वृष भानू दुलारी [हो]

श्री वृष भानू दुजारी ।

भवप्रीता चित राधा संग नित

खेलै रास बिहारी [हो]

खेलै रास बिहारी ।

(भादुरीया) मूमर

जैसेँ बादल बिजुरिया युगल जोरी ॥

॥ धुन ॥ नैना भरे जैसेँ भरिया भिजि चुनरी

(५६) मूमर (भदवारी)

सुनीके मूरली ध्वनि, निन्दा से जागी तखनी ।

अखिया मेढ़ेतें धनी धाय जहां श्याम राय,

॥ धुन ॥ कुंजे पैसी मूरली बजाय जहां श्याम...

कामिनी यामिनी जोगें जाय जहां श्याम राय,

कुंजे पैसी मूरली बजाय ॥

भादव राति अंधारी, सपें धारें भरे भरी,

बिजुलिया आंखि भलसाय, जहां श्याम राय ॥ कुंजे...

भींगुरां करे अनोर, मौरा बोले कठोर,

सेही शुनी जीहा जे डराय, जहां श्याम राय ॥

कुंजे पैसी.....

फूल बाणें उड़ी जाय, भवप्रीतानन्द गाय,

अन्तरें युगल छवि छाव, वहां श्याम राय ॥ कुंजे पैसी...

(५७) मूमर (राधाकृष्ण वर्णन)

तोर मुख हेरी टूटे शशी के गुमान

बिहुसावे सजनि दिये जैसे पीरिति के शान ।

तोहरो मौवा धनी ! धनुका समान ।

मारि देली सजनि हृदये नयना के वाण ॥ मारि...
 यौवना कमल कली चितें अनुमान ।
 सेहो देखी सजनी ललचये रसिक पराण ॥ सेहो...
 तोहरो रूपें हरावल जे गेयान
 दीन राति सजनी भवप्रीताक हरि पदे ध्यान ॥

(६१) भूम्बर

नामी तोर केशिया तरुण वयसिया
 दाँते शोभे रे उरेखल मिशिया (दाँते शोभे)
 दुयोरे यौवना जैसेँ मदन कलशीया
 सेहो देखी मोरमन गेले रसिया (सेहो देखी)
 तोरो रूपे भलकये चहूँ दिशिया ।
 बोले धनी मुखें हँसी रे बिहुसिया (बोले धनी)
 अवप्रीता कहे प्रेमे सुनिले रूपसिया
 जुगल बिनूँ चित हमरो उदसिया (तोरा बिनूँ)

(६२) भूम्बर (भादुरिया)

भलके बिजुली रे गरजे घनघोर ।
 रे गरजे घनघोर ।
 ॥ धुन ॥ राति कुँजें एकेली रे, तड़पे जीहा मोर ।

पापि रे पपिहा पिया पिया करे शोर
 पिया पिया करे शोर ।
 आधि राति बिंधये तीरें मदन कठोर ॥ आधि...
 भीगुर दादुर बोले कुहूकत मोर
 बनेँ कुहूकत मोर ।
 सुनी कोयली के शोर रे, बाढ़े विरह घोर ॥
 चून्दा टपके दिये पवन भीकोर
 सखी, पवन भीकोर ।
 भवप्रीता श्री राधा श्याम भावे जे बिभोर ॥

(६३) भूम्बर दांड भूम्बर (भदुरिया)

चाननी सोहान राति, मगन चकोर गे सजनी
 ॥ धुन ॥ सजन चकेवा चकेवी दुखि आंखिया लोर ।
 चंदना के डारी कोयली पपीहा के शोर गे सजनी,
 सजन, कदमाके डारी चढ़ि नाचे जे मोर ॥ धुन ॥
 आधि राति मारे तीरें, मदन कठोर गे सजनी,
 सजन, दगधे विरह आगि जिहा जे मोर ॥ धुन ॥
 भवप्रीताक मन कुँजें, लागे प्रेम डोर गे सजनी,
 सजन, तहमाँ जे निते दोले किशोरी किशोर गे सजनि ॥ धुन ॥

(६४) भूषण (भादुरिया) भादव रातिक वर्णन

राति अंधारी बने, जूगूनू भलकनमा कि
वन देवी ।

पिन्हें रतन गहनमा कि
वन देवी । पिन्हे.....

नाचे देवी गावे गीता कोकिल कुजनमा कि
पह्यां बाजे । ?

पायल भींगुरा गुंजनमा कि
पह्यां बाजे ॥ पायल...

संगे यमुना नाचे कल्लोल कीर्तनमा कि
पूछ दये हुके

मौरा मंगनमा कि
पूछ दये हुके । मौरा.....

मृदंगादि बाजा बाजे, दादुर रटनमा कि
भवप्रीता ।

भावे हरि के चरणमा कि
भवप्रीता ।

(६५) भूषण (हिन्दी)

श्याम चले राधा के पास
डिमिक डिमिक डमरू के ताल
बम बम बम बम बाजे गाल ॥ श्याम.....

हो राधा जी ! छोड़ो मान
यही सींघा में देता तान
माफ करो अब मेरा दोष
दास समझ कर छाड़ो रोष ॥ माफ...

इसी तरह चलते धनश्याम ।
जा पहुँचे राधा के धाम ।
जहाँ प्यारी सखीयन के साथ
करती थी माधव की बात ॥ जहाँ...

देख कर नवीन योगी राज
चौक गड़ी सखीयन समाज ।

उसी तरफ सब देतो ध्यान ।
भवप्रीता के हरि गुण मान ॥ उसी...

श्री कृष्ण मथुरा गमन
(६६) भूम्नर (भादुरिया)
(छन्द)

अक्रूर के रथे हरि जब बैठल जाय ।
गोपी संगे दौड़ी राधा कहे अगुआय

भूमर

राधा कहे घाट रोकी यहीं रह कमल आंखो
॥ धुन ॥ श्याम ! ने जाह मथुरा ॥

गोपी होते विरह विधुरा

हे श्याम ! ने जाह मथुरा ॥

आंखियां रहते अन्ध, होयते जसोदा नन्द

श्याम ! ने जाह मथुरा ।

के सुनाते वंशीया के सुरा हे श्याम

ने जाह मथुरा ॥ धुन ॥

समे गोपी आंखी लोरें, जमुना बहते जोरें,

श्याम, ने जाह मथुरा ।

काद होते गोकुला के धूरा हे श्याम !

ने जाह मथुरा ॥ धुन ॥

भवप्रीताक हृदि वासैं, दुइयो रही खेल रासैं

श्याम, ने जाह मथुरा ।

ई वासना ने राख अथूरा हे श्याम !

ने जाह मथुरा ॥ धुन ॥

(६७) भूम्नर (भादुरिया) राधाक विरह वर्णन
किछु ने राखल बांकी, तेजी गेल कमल आंखी
एका राखी, भांगी प्रेम पिंजड़ा उड़ल पाखी ।
॥ धुन ॥ सुन प्राण सखी !

भादरा बादरा जोखें भरे आंखि ॥

मेघा वरषे डाकी, राति बीते जागि-जागि

एका थाकी,

व्याकुल पराण से बंधुआ लागि ॥ धुन ॥

जलद् लीला निरखी, शिखनी सहित सुखी

नाचे शिखी,

कामे मारत वाण विषे माखि ॥ धुन ॥

हरिक् रूप चिते राखी, भवप्रीतां कहे हांकी

सदा देखी,

युगल मूरतिया मरमें आंकि

सदा देखी ॥ धुन ॥

(६८) भूम्बर (भदवारी)
 तेजले मोहन मन भेले दुनमुन रे ।
 उड़ी गेले शुगना पिंजड़ा भेले शून रे ॥ उड़ी गेले...
 माधो के विरह उधो ! अन्तरे कठीन रे !
 रावण के चिता जोखें धिधके आगिन रे ॥ रावण...
 श्याम बिना तड़पये जीहा निशि दिन रे ।
 तड़पे मछुली जैसेँ, मये पानीस भीन रे ॥ तड़पे...
 राधा माधव चारी, चरण नलीन रे ।
 भवप्रीताक मन मौंरा तहिमेजे लीन रे ॥ भवप्रीताक ..

(६९) भूम्बर (भादुरिया) राधाक विरह वर्णन
 माधव लये अक्रूर चली गेला मधुपुर,
 सुन करी एहो नन्द ग्राम सखी ।
 सुन करी एहो नन्द ग्राम ।
 ॥ धुन ॥ हाय रे ! करम भेले वाम ॥
 गोकुला भेले अंधार, प्राण करे हाहाकार
 आवे ने राखवें जीहा हाम सखी !
 आवें ने राखवें जीहा हाम ॥ धुन ॥

पंछी जों रहेतलों, उड़ी पिया मिले तलों,
 नारी सें ने बने एको काम सखी
 नारी सें ने बने एको काम ॥ धुन ॥
 भवप्रीताक चित माफे प्रेम के रास विराजे
 तहाँ नितें खेले राधा श्याम सखी
 तहाँ नित खेले राधा श्याम ॥ धुन ॥



(७०) भूम्बर (भादुरिया)
 जेही दिन गेला श्याम, विधि मोही भेल वाम
 सखी ! सभे सुन भेले ।
 ॥ धुन ॥ गोविन्दे गोकुला तेजी गेले रे सखी ।
 सभे सुन भेले ॥
 दिने जे लागे अंधार, वरपे जलद धार
 सखी ! सभे सुन भेले ।
 राधा मन सुन करी देले रे सखी !
 सभे सुन भेले ॥ धुन ॥
 बदरा वरपे जैसेँ, दुयो आंखि भरै तेसेँ
 सखी ! सभे सुन भेले ।

तयो हिया आगि ने भिक्काले रे सखी ।

सभे सुन भेले ॥ धुन ॥

भवप्रीता कहे तबे जों सुनें भेले सभे,

सखी ! सभे सुन भेले ।

प्राण काहे देहा में रहले रे सखी !

सभे सुन भेले ॥ धुन ॥

(७१) भूम्नर (भादुरिया) राधाक बिरह वर्णन

ऐसन निंदिया में अगिया लागी जाय

हे अगिया लागी जाय ।

कौने मोर कन्हैया लाल ले गेली चोराय ॥

एत्ते रे, जानेतों निल मणि चोरी जाय

निल मणि चोरी जाय ।

गांथी मोती के हारें गरे देतों लटकाय ॥ २ ॥

जागि रे, सगरो निशी, राखेतों जोगाय

सखी ! राखेतों जोगाय ।

भोर भोरें भौंवर देतों कमले लगाय ॥ धुन ॥

प्रातें, मदन जाला सहलो ने जाय

सखी ! सहलो ने जाय ।

भवप्रीता कहथी राधा गेली ववराय ॥ धुन ॥

(७२) भूम्नर (भववारी)

गरजे बदरा घोर, हिया मारे शैल गो

असमये,

मोरे पिया तेजी गेल गो,

असमये.....॥

सांचलो यौवना मोर, विफले गेल गो,

गुणी-गुणी हियरा भांभर भेल गो,

गुणी गुणी.....॥

राति हेरी मने पड़े, सुख राति खेल गो

फूल शरें

कामे विकलिया देल गो,

फूल शरें.....॥

कैसे काटवे राति, कुंजें एकेल गो

भवप्रीता ।

हरि पदे मजी गेल गो

भवप्रीता.....

(७३) भूम्नर (भादुरिया)

। तेजी गेला यदुपनिया
गे सजनि ! सजन

तब सहीं दिने लागे यहां घोर रतिया ।

गे सजनि ! सजन ॥

कैसें भूलव हम माधव पीरितिया

गे सजनि, सजन !

हियरां समाये गेले श्यामली सुरतिया

गे सजनी.....

लोरा कजरा कारी कानी नखा सतिया

गे सजनि ! सजन ॥

लिखवे अंचरा चीरी पिया प्रेम पतिया

गे सजनी, सजन !.....

ने सुहावे धन जन जीवन धरतिया

गे सजनी सजन

भवप्रीता हृदे साजे युगल मूरतिया

गे सजनी ! सजन ॥

भवप्रीता.....

(७४) भूम्नर (भादुरिया)

॥ धुन ॥ कोयलिया ! यहाँ काहे राति करे शोर ?
कोयलिया.....॥

यहाँ जे विधुरावाला बहावये लोर ।

कोयलिया विरह अग्नि चहुँओर ॥ धुन ॥

मथुरा में बोलें जहाँ कालिया किशोर

कोयलिया ! कुबजी से करये किलोर ॥ धुन ॥

केली कुंजे वासा बांधी करिहें अनोर

कोयलिया ! जहाँ बंशी देरे मन चोर ॥ धुन ॥

लेले जाहीं मोरा भौरा मलया भीकोर

कोयलिया ! भवप्रीता युगल भावे भोर ॥ धुन ॥

(७५) भूम्नर (भादुरिया)

॥ धुन ॥ जब से तेजला चुन्दावन नील माधव

तब से मलीन भेले मन ।

पीरिति जोरी के हरि, तेजी गेला मधुपुरी,

तहाँ जाये कुबजी मिलन ॥ धुन ॥

सुन लागे घाट बाट, सुन नन्दक राजपाट

सुन लागे श्रीरास भवन ॥ धुन ॥

निन्दा भूला समे गेल, हियरा भांभरी भेल
आधि राति दग्धे मदन ॥ धुन ॥
भवप्रीतां भावे मन राधा माधव चरण
शमन दमन निरंजन ॥ धुन ॥

(७६) भूमर

॥ धुन ॥ अँखियां निन्दो नाही अखियां निन्दो नाही
अँखिया निन्दो नाही ।

के आनते श्यामक् धरी बांही,
अँखियां निन्दो नाही ॥
भादो राति भयंकर एकसरी लागे डर
अँखिया निन्दो नाही ।

ने आले नागर कुंज माही ॥ धुन ॥ अँखीय ...
जेही कुंजे चन्दा रानी, बैठली सांजी मोहिनी
अखियां निन्दो नाही ।

मोहन रहला राति बांही ॥ धुन ॥ अँखीया निन्दो...
विरहे वेकल प्राण, मदने हानत वाण
अँखियां निन्दो नाही ।

सेजा जैसन बरकले लाही ॥ धुन ॥

भवप्रीताक् श्रीनिवास ! अन्ते दिहा चिर वास
अँखिया निन्दो नाही ।
राधा संगे जहाँ तोहे ताही ॥ धुन ॥ अँखीया...

(७७) भूमर (गोपिनीक विरह वर्णन)

॥ धुन ॥ कलपी कलपी फाटे हिया
तेजी गेला माधव पिया ॥

कलपी कलपी फाटे हिया तेजि गेल माधव पिया
कही गेल दश दिन, कितल बरप दिन
तयो ने आवले कपटिया ॥ धुन ॥ तेजि...
जाति देलों कुल देलों, अपन पर सभीस गेलों,
कान्दी कान्दी ने सुभे अँखिया ॥ धुन ॥ तेजि...
आँख गेल समांग गेल, गतर विलाये गेल,
भावी गुणी भाभर देहिया ॥ धुन ॥
कांदी कहे राधा रानी, कुवजी भेले बेरिणी
अवप्रीता भावे त्रिमंगिया ॥ धुन ॥ तेजि...

(७८) भूम्बर

चंचल चित हमार, जैसे विनू खेपनिहार
दूती ! ने आले कन्हैया ।

डगमग करे नदी नैया रे दूती !

ने आले कन्हैया ॥

॥ धुन ॥ आगी भेले चरपा भदैया रे दूती !

ने आले कन्हैया ॥

बाहर भीतर आर, करे प्राण बारम्बार

दूती ! ने आले कन्हैया ।

ठीके जैसे विजुली भलैया रे दूती !

ने आले कन्हैया ॥ धुन ॥

बदरा वरषे जैसे, दुयो आँखि भरे तैसे

दूती ! ने आले कन्हैया ।

मारे तीरे मदन मुदैया रे दूती !

ने आले कन्हैया ॥ धुन ॥

भवप्रीता के चिते श्याम, जैसे राधा के लये वाम

दूती ! ने आले कन्हैया ।

देखा दिहा आखिरी समैया रे दूती !

ने आले कन्हैया ॥ धुन ॥

(८०) भूम्बर (भादुरिया)

॥ धुन ॥ उधो, कि कहव तोरा, चित चोराय भागल चित चोरा
हे उधो ! कि कहव तोरा ! ?

दे मेला दारुण दुख मोरा ।

हे उधो ! कि कहव तोरा ॥

हमरा विसारी हरि, अब जाये मधुपुरी

उधो ! कि कहव तोरा ।

कुबजी से करत किलोरा

हे उधो ! कि कहव तोरा ॥ धुन ॥ दे मेला...

सुन करल वृन्दावन, सुन राधा के जीवन

उधो ! कि कहव तोरा ।

सुन करल जसोदा के कोरा

हे उधो ! कि कहव तोरा ॥ धुन ॥

यहाँ सभे सुखी गेल, जसुना में ब्राह्म भेल ।

उधो कि कहव तोरा

पाये नित गोपी आँखि लोरा

हे उधो ! कि कहव तोरा ॥ धुन ॥

डारे ने नाचत मोरा, फूले ने बैठत भौरा

उधो ! कि कहव तोरा ।

ने सुनावे मुरली के सोरा

हे उधो ! कि कहव तोरा ॥ धुन ॥

भवप्रीता हृदि मांभ, सदा करत विराज

उधो ! कि कहव तोरा

राधा संगे श्रीनन्द किशोरा

हे उधो ! कि कहव तोरा ॥ धुन ॥

(७६) ऋजुवर (भादुरिया) वद्वष के प्रति राधाक उक्ति

॥ धुन ॥ उधो हमरे अभाग, उधो हमरे अभाग

उधो हमरे अभाग ।

हुनको ने दोष ने हुनका सती राग

उधो हमरे अभाग ॥

जबलें लीलारें छले माधव सोहाग

तबले सेवलों हरि, करि सभे त्याग ॥ धुन ॥

मोही तेजी कुवजी से नव अनुराग,

देलथी दरपणियां में हीरवा के दाग ॥ धुन ॥

जबलें जीयवे सुख भोग से विराग,

राखवे चरणमा में मतिया सजाग ॥ धुन ॥

भवप्रीताक देहे मधु ! विषवा के आग,

देहो नाथी विषय वासना रूपि नाग ॥ धुन ॥

(८०) ऋजुवर (भादुरिया)

जोड़लों पीरिति तोरी, हमरा विसारी हरि,

॥ धुन ॥ चली मेला मथुरा नगर में,

कुवजी के घर में ॥ चली मेला.....

आवल बरषा ऋतु, भांगल धैरज सेतु,

भसावल विरह सागर में ।

जलन्ते जहर में ॥

भसावल.....

वारिधारा, रूपे काम, बरषे शर अविराम,

अवला कि टिके इ समर में ।

पति नहीं घर में ॥

अवला कि.....॥ धुन ॥

(हरि) सभी के जे उबारिहा, भवप्रीताक इचाय दिहा,

एक रस चैतन्य सागर में ।

अनादि ईश्वर में ।

एकरस.....

[फेरु ने जठर में] ॥ धुन ॥

(७४)

(८१) भ्रून्मर (भादुरिया)

यहाँ बिना मधु रिपु, मधु ऋतु जारे वधू,

कोकिल काहे कुहू के ?

के वैरिणी मोहले बंधु के

रे कोकिल !

काहे कुहू के ?

॥ धुन ॥ तोर बोली चुमे शेल बुके

रे कोकिल !

काहे कुहू के ॥

हम विधुरा रमणि जारे विरह आगिनि

कोकिल काहे कुहू के ?

मलया वतासे आगिन हुके

रे कोकिल !

काहे कुहू के ॥ धुन ॥

अमाके मंजरी बाण, मदन साधे निशान,

कोकिल काहे कुहू के ?

टानी निज फूल के धनु के

रे कोकिल !

काहे कुहू के ? ॥ धुन ॥

(७५)

भौरा के गुंजन गान, पपिहा के पिया तान,

कोकिल काहे कुहू के ?

कमल सौरभें नागें फूके

रे कोकिल !

काहे कुहू के ? ॥ धुन ॥

भवप्रीताक् अन्ते हरि, जम भय से उबारि,

कोकिल, काहे कुहू के ?

राखी लिहा, आपन मूलूके

हे हरि !

कोकिल कुहू के ! ॥ धुन ॥

(८२) भ्रून्मर (भादुरिया)

अक्रूरजे क्रूर भेल, हरी हरि लये गेल,

सखि ! नन्दके नन्दन ।

॥ धुन ॥ बांधी गेला पीरिति बन्धन रे सखि !

नन्दके नन्दन ।

गोकुला में उठाले क्रन्दन रे सखि !

नन्दके नन्दन ॥ धुन ॥

शुन्य हृदय मंडल, लहरे विरहा नल

सखि ! नन्दके नन्दन ।

जोरें जरे जीवन इन्धन रे सखि !

नन्दके नन्दन ॥ धुन ॥

हमरा जोगिनी करि, देलथीं भसम भोरी,

सखि ! नन्दके नन्दन ।

कुवजी के आदर चन्दन रे सखि ।

नन्दके नन्दन ॥ धुन ॥

भवप्रीता प्रेम भरी, राधा कृष्ण ध्यान धरी,

सखि ! नन्दके नन्दन ।

करे नित्य चरण वन्दन रे सखि !

नन्दके नन्दन ॥ धुन ॥

(८३) भूकम्प (मादवारी)

फेकी विरह सागरें, रहला श्याम मधुपुरें

(राम) श्यामली सुरतिया ।

तयो ने टूटे मोर पीरितिया हो राम !

॥ धुन ॥ श्यामली सुरतिया ॥ तयो ने...

भूललो ने जाय से सुरतिया हो राम !

श्यामली सुरतिया ॥

पहले जतन करि, बंशी में सनेही भरी

राम ! श्यामली सुरतिया ।

प्रेम जोड़ल छल मतिया हो राम ।

श्यामली सुरतिया ॥ प्रेम.....

राति मेघा अंधारी, गरजे बरषे भारी

राम ! श्यामली सुरतिया ।

मलका मलके कापें छतिया हो राम !

श्यामली सुरतिया ॥ मलका...

एकेलि डरत प्राण, कामे भारे फूल बाण,

राम ! श्यामली सुरतिया ।

अवप्रोताक हरि पदें गतिया हो राम !

श्यामली सुरतिया ॥ अवप्रोताक ...

(८४) श्रृंगार (भादवारी)

जों जों गरजये कारि रे वदरिया

रे सजनी !

॥ धुन ॥ तों तों बेयाकुल प्राण रे सजनी ॥

जैसे-जैसे चमकये सोना के बिजुलिया

रे सजनी !

छट छट लागे फूल बाण रे सजनी ॥ छट...

जारे यौवन वन विरह के अगिया

रे सजनी !

बेपछ भयला भगवान रे सजनी ॥ बेपछ...

अवधीता कहे हरि, अन्तर विहरिया

रे सजनी !

तयो काटे विरह भयान रे सजनी ॥ धुन ॥

(८५) श्रृंगार (भादवारी)

नदी उमड़लो वान, खेते हरिहर धान,

॥ धुन ॥ देखते भदरो सोहान मे दूति !

कोकिला के कुहू गान, पपिहा के मीठी तान,

वदरा घेरल आसमान मे दूति ! देखते...

आजूने आवला श्याम, बिधि होबल चाम,

मदने हानत हिया बाण मे दूति ॥ मदने...

कालिया कठोर रीति, देखि तड़पये छाती

भवप्राताक ने छुटे घेयान मे दूति ॥ धुन ॥



(८६) श्रृंगार (भादवारी)

वनके सहेलिया रे, कारी कोयलिया !

॥ धुन ॥ कोयलिया, आधि राति काहे करे शोर ॥

पिया परदेशिया कि तोहरो रूपसिया ?

रूपसिया, जारे कि विरह दुख घोर ॥ धुन ॥

साथे तोर पखीया रे, तयो काहे दुखिया ?

रे दुखिया, पीउ जाह निज पिया ठोर ॥ धुन ॥

अवधीताक गतिया कि तोहीं श्री पतिया,

श्रीपतिया तोरे श्री चरणे गति मोर ॥

(८७) भ्रूमर (भदवारी)

जहाँ चिरिहिनि वाला, एका कुंजें सहे जाला
तहाँ काहे, तहाँ काहे, बोले कोकिल

राति मभारि कि तहाँ काहे ? ॥

जहाँ जाये रस राज, कुवजी सें भोगे राज

तहाँ जाये, तहाँ जाये रे कोकिल !

बोलें जीहा भरी कि तहाँ जाये ॥

मधु अलि संगे करि, जाह कोकिल मधुपुरी
केलि बनें, केलि बने रे जहाँ,

विहरे विहारी कि केलि बनें ॥

भवप्रीता करे मन, सिरें धरी राधा धन

तहाँ जाये, तहाँ जाये रे कोकिल !

मिलावे मुरारी कि तहाँ जाये ॥

भवप्रीताक् साथ भारि, कुवजी सें छिनी हरि
आनी ब्रजें, आनि ब्रजे रे कोकिल !

मिलावे किशोरी कि आनि ब्रजे ॥ धुन ॥



(८८) भ्रूमर (गणेश वन्दना)



भादव मास आवल हरीहर धरावल

उमड़ये नदी दूती ! उमड़ये नदी ।

मुसां रथें उतरला गणेश धरती

दूती सुन्दर मूरति ।

॥ धुन ॥ तरुण अरुण छवि सिन्दुरा के ज्योति

दूती ! सुन्दर मूरति ॥

गजेन्द्र मुख सुन्दर एकदन्त लम्बोदर

भालें निशापति ।

दूती ! भालें निशापति ॥२॥

शिरें सिन्दुर शोभे लाल चादर धोती

दूती ! सुन्दर मूरति ॥ धुन ॥

चारि हाथें चमत्कार पाशाकुश कुम्भ आर

दन्त शोभा अति,

रतन मुकुता हार गलें गज मोती

दूती ! सुन्दर मूरति ॥ धुन ॥

परमानन्दे मगन, डुलू डुलू त्रिनयन
कमलें वसति !
दूती ! कमलें वसति !

दुहू गालें भरे मद भौरा खेले माति
दूती ! सुन्दर मूरति ॥ धुन ॥
अग्रपूजा त्रिभुवने भवप्रीता श्री चरणे
करये प्रणति दूती ! करये प्रणति ।
विनायक विघ्न हर देह शुभ मति
दूती ! सुन्दर मूरति ॥ धुन ॥

(८६) ऋक्मन्त्र (भदवारी) गणेश वन्दना

॥ धुन ॥ सभे देखाय जैसन लाल, सभे देखाय जैसन लाल,
लाले लाल बनी आयला गौरी के लाल ॥
गणेश जी के-देहा लाल, माला चन्दन लाल,
लाले कमलें बैठल चरण सोभे लाल ॥ धुन ॥
भांग पीके आँखि लाल, सिरें सिन्दूर लाल,
गलां माणिक लाल धोती चादर लाल ॥ धुन ॥
अकाशें अरुण लाल, छटा से जगत लाल,

गाछें कनेल जवा लाल पानीम् कमल लाल ॥ धुन ॥
भवप्रीताक् हृद कमल लाल, तापर दुर्गा पद लाल,
लाले लाल हेरी भागे काला वरण काल ॥ धुन ॥

(८७) ऋक्मन्त्र (गणेश रूप वर्णन)

गज मुंह की सुन्दर, सिन्दुर कपार पर
दाढ़ीं पर सोभे लाल धोतिया
हो, जय देव गणपतिया ॥
॥ धुन ॥ लाले लाल सुन्दर मूरतिया हो,
जयदेव गणपतिया ॥

लीलारें जे उगे चाँद, लाल चादर भरी कान्ध
चारि भूज गले गज मोतिया हो ॥ धुन ॥
भांग पीकें राति दिन डुलू-डुलू आँखिं तीन,
दाँते छीन भीन वैरिक् छतिया हो ॥ धुन ॥
भवप्रीता मागे वर, दया कर लम्बोदर,
दूर कर विपद कुमतिया हो ॥ धुन ॥

(६१) भूम्नर (गणेशक विसर्जन)

कैसे तोरा देव विसर्जन प्रभु गजानन

॥ धुन ॥ कैसे तोरा देव विसर्जन ॥

आवतहे भादव मासे, समे मगन हुलाशें

सभी मिली पूजलों चरण

प्रभु ! गजानन ॥ धुन ॥

गीत वाद्य नृत संगे, समय बितल रंगे,

दिन राति समान जैसन

प्रभु ! गजानन ॥ धुन ॥

तोहरो लगाये भोग, सभी करे छला भोग,

पूजा पाठ ब्राह्मण भोजन

प्रभु ! गजानन ॥ धुन ॥

आरती करते तोर, अखिया से खसे लोर,

नहीं होवे मंत्र उच्चारण

प्रभु ! गजानन ।

भवप्रीताक दया करि, आश्विने आविह घुरि

माय संगें दिह दर्शन ।

प्रभु ! गजानन ॥ धुन ॥

(६२) भूम्नर

॥ धुन ॥ तोरा में अम्बिका आगमन हे आश्विन

तोरा में अम्बिका आगमन ॥

लवे पूजा सरंजाम, लेले आयल्ले मर्त धाम

विछान्ले हरित कुशासन हे आश्विन ॥ धुन ॥

आनल्ले निरमल जल, लव्वे सेफाली कमल

वाजनाले भौरा के गुंजन हे आश्विन । धुन ॥

लवे केतारिके रस, नवीन फल गोरस,

धूपा शीत सुगंध पवन हे आश्विन ॥ धुन ॥

आरती ले दिन निशि निरमल रवि शशि,

कांश फूला चामर शोभन हे आश्विन ॥ धुन ॥

भवप्रीताक निद लेल्ले, नव जागरण देल्ले

पूजे लागी अनया चरण हे आश्विन ॥ धुन ॥

आवे फुटलो कांश, आवलो आश्विन मांस,
वही गेलो शीतल वतास मे दूती !
वही गेलो.....

दूर गेल मेघ घटा प्रकाशल चाँद छटा
आवे देवी पूजा के हुलाश मे दूती !
आवे देवी.....

ऐसन सोहान दिन, पिया तेजी भेला भीन,
मने नहीं भावे गृह वास मे दूती !
मने नहीं.....

“भवप्रीता” कहे गोरी आवे दुख थोरा थोरी,
कातिके करीहा पियास् रास मे दूती !
कातिके.....



चन्द्रवदनी गौरी, वरण जे सोना सरी
आरूपा-स्वरूप धरी ।

दश भुजा सिंघे असवारी
॥ धुन ॥ देलथीं असुरे मारी ॥

बरछी चलाये बुका फारी ।

देलथीं महीपे मारी ॥

देलथीं असुरे मारी देलथीं असुरे मारी

देलथीं महीपे मारी । बरछी ..

रतन भल्लके अँगें, गणेश कार्तिक संगे

सरस्वती लक्खी प्यारी ।

जया आर विजया दुयो धारी ॥ धुन ॥

भवप्रीता कर जोरी, चरणे मस्तक धरी,

कहत विनय करी ।

हेरू माता पलक उघारी ॥ धुन ॥



(८८) भूम्बर (भादुरिया)

शरत् के चांद हेरी मगन चकोर

सखि ! मगन चकोर ।

पिया नहीं गृह मोर, रे उमरिया जे थोर ।

पिया नहीं गृह मोर...॥२॥

कमलें गुंजरे भौरा मधु रसैं भोर

सखि ! मधु रसैं भोर ।

दिये पवनैं भिकोर रे, सिहरे अंग मोर ॥ २ ॥

फूल शरें विधे दिया मदन कठोर

सखि ! मदन कठोर ।

रे यौवना करे जोर, दु नयना बहे लोर ॥ २ ॥

कल ना पड़त सखि ! विनू चित चोर

सखि ! विनू चित चोर ।

“मवप्रीता” कर जोर भावे कलिया किशोर ॥ २ ॥



(८९) नखुराई (ग्वाळा समाज के लोक गीत)

उधो ! बड़ी भागी मिले निलमणियां रे ना,

उधो ! साधे लेलों पीरिति बन्धन नियारे ना ॥२॥

रामा रे, छीनी जे लेलके कुवजी रे सैतनिया

भला हो राम ।

रामा रे, छीनी जे लेलके..... ॥१॥

उधो ! राति ने सोभे विनू चननिया रे ना,

उधो ! सोभये ने नदी, विनू पनियां रे ना ॥२॥

रामा रे, ने सोभये स्वामी विनू तरुणिया

भला हो राम ॥

रामा रे ने सोभये.....

उधो ! नहीं जे रुचे भोजन पनिया रे ना,

उधो, राति नहीं आवे आँखि निंदिया रे ना ॥२॥

रामा रे, लोटे छयके सेजिया कारी रे,

नगिनिया भला हो राम ॥

रामा रे लोटे छयके.....॥३॥

उधो ! भवप्रीता, अधम परनिया रे ना,

उधो, ने करले पूनित करनिया रे ना

(६०)

रामा रे, मांगे अन्ते हरि से पद तरणिया
भला हो राम ॥
रामा रे मांगें.....॥४॥

—०—

(६७) भूम्बर

॥ धुन ॥ मोहले भूवन दश चारि रे नारी !
तोर बलिहारी ॥
मोहनी के रूपें मात् बौरावला भोला नाथ
नारी तोर बलिहारी
गोपी प्रेमे जनमे घुरारी रे नारी ॥२॥
तोर बलिहारी ॥ धुन ॥
विधाता के मृगाकार, इन्द्र के आँखि हजार
नारी तोर बलिहारी ।
उजर चन्द्रमा बीचें कारी रे नारी ॥२॥
तोर बलिहारी ॥ धुन ॥
कते मुनिक तप नाश, कते शूरवीर दास
नारी तोर बलिहारी ।

(६१)

सोना के गढ़ लंका देले जारी रे नारी
तोर बलिहारी ॥ धुन ॥
“भवप्रीता” कहे सार, तोहिं सृष्टि के आधार
नारी तोर बलिहारी ।
संसार मरु-भूमि के बारी रे नारी
तोर बलिहारी ॥ धुन ॥



(श्लोक) तारक मंत्र

वाराणस्यां पुरारिः परम करुणया
मोक्षदो विष्णुभक्तम् ।
गंगायां न्यस्तदेहं कथयति सततम्
ग्राहकणं किल्लेदम् ।
नेयं काशी न गंगा नच भवति हरिर्नैव
चत्वं न चाहम् ।
सर्वं चैतन्य मात्रं जगदिदं मखिलम्
स्वप्न वच्चिद् विवर्त्तः ॥

श्री श्री काशी धाम महात्म्य

तारक मंत्र (त्रिपदी छन्द)

जेकरो कहूँ गति, वाराणसी तेकर गति

जगत में धन्य काशी धाम ।

जहाँ बाबा विश्वनाथ, बसे अनपूरणा साथ ।

जीवक दियेल अनन्त विश्राम ॥

प्राणी करेल उद्धार, गंगा अर्द्ध चन्द्रकार

रूप धरी बहे अनिवार ।

ईजे आनन्द कानन, सदा शिव निकेतन,

यहे विश्वनाथ दरवार ।

मरणी हारक गंगा तीरे, कहर्षी कान के तरें

श्री तारक मंत्र मोक्षधार ।

प्रभु दया के सागर, कान में भरती हर

ज्ञान उपदेश इ प्रकार ॥

(६८) भूम्नर

ने काशी, ने गंगा हरि, ने तों, ने हम त्रिपुरारी

सर्व व्यापी चैतन्य एक सार

॥ धुन ॥ अनित्य असार ।

यहो विश्व माया के विकार

अनित्य असार ॥

जल आर वरफ जैसन, चैतन्य आर जग तैसन,

स्वपन रचित निराधार

अनित्य असार ॥ धुन ॥

शंकर मुखें विशेष, पाये, ज्ञान उपदेश,

धरे जीवें चैतन्य आकार

अनित्य असार ॥ धुन ॥

द्विज अवधीता भणे श्री शिव दुर्गा चरणे

अन्ते जैसे रहे मन हमार ।

अनित्य असार ॥ धुन ॥

(६९) भूम्नर (भदवारी)

॥ धुन ॥ समय के नदिया बही जाय, रे मन ले नहाय,

समय के नदिया बही जाय ॥

नाही ले पीले रे पानी, आगू लागी राखे आनी,

सुखलें नदी ने चले उपाय ।

रे मन ले नहाय ॥ धुन ॥

राखल पानी कर असनान, दोसरा के करें दान
जाय के बेरा संगे ले लगाय

रे मन ले नहाय ॥ धुन ॥

नहावे नहावे करी, जे बैठे आलसे भरी,
सेहो जे आखिरी पछताय

रे मन ! ले नहाय ॥ धुन ॥

भवप्रोता कहे हरि ! अन्ते जैसे युगल जोरी,

हृदय कमलें देखल जाय

रे मन ले नहाय...॥ धुन ॥

(१००) भूष्मन्त्र

दारुण बूढ़ापा देल देखा,

॥ धुन ॥ मन रे ! रूप रंगे पड़ी गेल फीका ॥

कार केश सफाकरि इशारां कहथीं हरि,

अबहुं दिल साफ करें बोका रे मन !

अबहुं दिल साफ करें बोका ॥ धुन ॥

अगिया जरे के डरें, दता टूटी भागे दूरें,

मुंहा भेल बानर के जोखा रे मन !

मुंहा भेल बानर के जोखा ।

मन रे ! बात चीत भये गेल रूखा ॥ धुन ॥

सुन्दरी तरुणी होइ, बाबा कही लागे गोइ,

एक हूँ ने कहे प्राण सखा रे मन !

एक हूँ ने कहे प्राण सखा !

मन रे ! तयो नहीं मिटे प्रेम भूखा ॥ धुन ॥

भवप्रोता कहे हरि, आबी के आखिरी बेरी,

राधा संगे चितें, दिहा देखा रे मन !

राधा संगे चितें दिहा देखा ।

प्रभु हो, रहे जैसे युगल रूप आंका ॥ धुन ॥

(१०१) भूष्मन्त्र (भादुरिया) सखो उक्ति

घरें ने सासु ससुर, ननदी दौरा भैंसुर .

गौरी ! वर वम भिखारी ।

एका भोला मशान बिहारी

॥ धुन ॥ हे गौरी ! वर वम भिखारी ॥

कैसें, करमै ससुरारी हे गौरी ?

वर वम भिखारी ॥

वर केने हीरा मोती, हाड़क माला चामक धोती
गौरी वर बम भिखारी ।

जटाक् नाग उठे फूफ्फुकारी हे गौरी !

वर बम भिखारी ॥ धुन ॥

वरें जे खाये जहर, भंगिया आठो पहर

गौरी वर बम भिखारी

नहीं चार दाल तरकारी हे गौरी

वर बम भिखारी ॥ धुन ॥

वर के भसम संग, मलिन होते सोनाक् अंग

गौरी वर बम भिखारी ।

भूताक् रंग देखी जाभे डरी हे गौरी !

वर बम भिखारी ॥ धुन ॥

भवप्रीता कहे माय, तोहीं अन्नपूर्णा जाय ।

गौरी वर बम भिखारी ।

कैलाशें उठाभे गढ़ भारी हे गौरी ।

वर बम भिखारी ।

दुवारीं पर कुवेर भंडारी हे गौरी !

वर बम भिखारी ॥ धुन ॥

(१०२) भूमर (भादुरिया)

देख करमेर फेर, गज माथा गणेशेर

अति न्यारी दूती ! अति न्यारी ।

भीक्षा करेन विश्वनाथ त्रिपुरारी ॥

॥ धुन ॥ दूती अति न्यारी करमेर गति दूती अति न्यारी ।

महाबल राजानल, जार आजा माने अग्नि जल,

अति न्यारी, दूती, अति न्यारी

सारथी होइला पाशाय राज्य हारी ॥ धुन ॥

करमेर गति दूती अति न्यारी

काल राजा होवेन राम, करम होइलो वाम

अति न्यारी दूती अति न्यारी ।

पितार वचने आज बन चारी ॥

करमेर गति दूती अति न्यारी ॥ धुन ॥

भवप्रीता कहे दूती ! आवाध करमेर गति

अति न्यारी ! दूती अति न्यारी ।

चक्राकार घुरे नाजाय निवारी

दूती अति न्यारी

करमेर गति दूती अति न्यारी ॥ धुन ॥

(१०३) भूमर (विद्या महिमा)



चाम के आँखी से देखा, पशु पक्षी समान लेखा
बिनु विद्या नर जन्म खाख
ढोल पिटल हॉक,
॥ धुन ॥ विद्या रतन आँखिके आँख ॥
ठके राज करमचारी, कार अत्तर भैसा सर्री
नहीं चिन्हे रसीद नम्बर दाग ॥ धुन ॥
ने जाने शास्त्र पुराण, ने बुझे भक्ति निर्वाण
बोली चाली बीचे पड़े फांक ॥ धुन ॥
भाई बहिन युवा बूढ़ा मन दये सीख पढ़ा
जय हरि भवप्रीताकू डाक ॥ धुन ॥



राष्ट्रीय भूमर

(१००)

राष्ट्रीय झुमर

(१०८) झुमर (१५ अगस्त के प्रति)



॥ धुन ॥ तोरा में विदेशी रवि अस्त हे १५ अगस्त
तोरा में विदेशी रवि अस्त ।

अपि युग ग्रह चाँद, इसवी सालक प्रमाण,
वहे साले पराधीन ध्वस्त हे १५ अगस्त ॥ धुन ॥
गाँधी जी के तप पूर्ण; दासत्व निगड़ चूर्ण
स्वाधीन जे भारत समस्त, हे १५ अगस्त ॥ धुन ॥
स्वतंत्र संग्राम रथि, विजयी नेता सुमति
विदेशी भागे में भेल व्यस्त हे १५ अगस्त ॥ धुन ॥
पाइके नव स्वराज्य, पहरी विविध साज,
आनन्दे भारतवासी मस्त हे १५ अगस्त ॥ धुन ॥
भवप्रीताक निवेदन, धर्म राख नारायण
हरि के चरणे चित न्यस्त हे १५ अगस्त ॥ धुन ॥

(१०१)

(१०८) झुमर (चीनक बुनौती)

॥ धुन ॥ सीमा छोड़ि भाग दुरा चार, तेजे अहंकार
सीमा छोड़ि भाग दुराचार ॥

देख चीनियांक भरी आँख
मरे घड़ी खोटाक पाँख ।

वीर भूमि भारत पर प्रहार ॥ धुन ॥

पहले कही भाय भाय, गोली मारे धौंय धौंय,
पापी के कपट व्यवहार ॥ धुन ॥

जानी राखें चावन लाय, भारत में खाय भुंजाक लाय,
यहां दाल ने गले तोहार ॥ धुन ॥

भारतवासीं खाय चीनी, चीनिया बादाम किनी,
तहां चीनियांक के करे केयार ॥ धुन ॥

नेहरू जी के ऐसन नीति, प्राय समे देशस् प्रीति,
सभी मदद दिये में तैयार ॥ धुन ॥

धनी, गरीब नारी नर, सर्वस्व करि निछावर
राखते स्वाधीन अधिकार ॥ धुन ॥

भूमि देने धन, देते, लहू देने प्राण देते,
करे लागी दुश्मन के संहार ॥ धुन ॥

वहे भारत छिके रे राड़, जहां दधिचि देल देहक हाड़
भवप्रीताक हरिनाम सार ॥ धुन ॥

(१०२)

(१०६) भूमर

निनायला के जैसन डाकू,
अचोके आय भोंके चाकू ।
तैसन चीनीया के व्यवहार रे,
भाय बनाय करै बैरा चार रे ।
॥ धुन ॥ पापीकू करें देश से बहार ॥
मजबूत करें अपन सरकार रे ॥
हं चीनिया जों भारत पयतो,
धन इज्जत, धरम लेतो;
लम्पट मतालि दुगचार रे ।
दरिद्र नास्तिक जे खूंखार रे ॥ धुन ॥
तन मन धन जन, करें सभी समर्पण ।
राष्ट्र शक्ति, करेले विस्तार रे,
जहीम होयतो दुश्मन के संहार रे ॥ धुन ।
श्री नेहरू जी कर्णधार, बुद्धि नावें करतो पार ।
भयान संकट पारावार रे ।
भवप्रीताकू ऐसन विचार रे ॥ धुन ॥



हास्य विनोद

भूमर

(भादुरिया)

दुर्जनं प्रथमं वन्दे .. — ..

(१०७) भूमर (भादुरिया)

छफन्दर महात्म्य

॥ धुन ॥ भैया लफन्दर ! तोहें विनू नगर के वन्दर
(तोरा डरें कांपे पुरन्दर)

तों पानी में तैरावें पत्थर,
केरासिन् के कहे अत्तर ।

पंडित के बभावे मोचन्दर ॥ धुन ॥

तों दिन के बतावे राति,
राति के जे दिनक् ख्याति ।
मृग (कस्तुरी मृग) के बनावे छुछुन्दर ॥ धुन ॥

मित्र मित्र में लड़ाय,
तोर अन्तर जुड़ाय,
निते किनी करे जे कन्दर ॥ धुन ॥

तोरा जें करे विश्वास,
तेकर होवे सर्व नाश,
तोहें फुसरी के बनावे भगन्दर ॥ धुन ॥
तोहीं राजू छेदी श्याम,
दादा के नाशले काम ।

भवप्रीताक् गति शिव सुन्दर ॥ धुन ॥

दोहा — ब्रह्म ज्ञान विनू नारि नर, करहीं न दूसरी बात ।
कौड़ी लागी लोभ वश करहि विप्र गुर घात ॥
(उत्तर काण्ड रामचरित्र मानस)

(१०८) भूकन्दर (खेमटा) बंगला भाषा में
(मिष्टान्तेते इष्ट प्राप्ति) कलियुग महिमा

छन्द — आधुनिक भाव धर्माधर्म कुसंस्कार ।
कलिते चार्वाक महा वाक्य मात्र सार ॥

भूमर

कलिते मानव गण, भोग लोभ परायण गो,
नाहि पूजा देवी देवतार ।
भवे चिन्ते देवी देवा, लइते मानव सेवा,
खावारे लइला अवतार हे हे,
॥ धुन ॥ भवे भय नाहि आर —
ब्रह्म ज्ञाने भरिल संसार हे हे । भवे.....
गजा माझे गजानन, खंडति करि गोपन गो,
कचूरीते कार्तिक कुमार ॥
चण्डी रस मूंड़ी, माझे, मंडाते चामुण्डा साजे,
काला जामें वास कालि मार हे हे ॥ धुन ॥

सरपुसीते पूर्ण शशि, बुंदे ते तारका राशि गो,
 पांतुआय पद भिनी प्राणाधार ।
 संदेशे मां सरस्वती, लड्डु ते लक्ष्मी वसति,
 परमान्ने परब्रह्म सार हे हे ॥ धुन ॥
 मुलाब्रजामुने गोपाल, गुप्तपु गोपिनी पाल गो,
 रसगोन्लाय रासेर बाहार ।
 मोहनभोगे मदन रावड़ीते रति सदन,
 बरफी ते वसन्त साकार हे हे ॥ धुन ॥
 सिंगाराय सिंह बाहिनी, निमकी ते नाराद मुनि गो,
 पापरेते पवन कुमार ।
 पेड़ाते प्रेमावतार, क्षीरे विष्णु निद्रागार ।
 वाताशाय वास विधातार हे हे ॥ धुन ॥
 पुरी माके जगन्नाथ, बालाई सुभद्रा साथ गो,
 आलूदमे अश्विनि कुमार ।
 पेये आचार कासुन्दी, ताहे वसेन मा कालिन्दी
 शरबते सुरसरी धार हे हे ॥ धुन ॥
 सीता भोगे सीताराम, राज भोगे राधाश्याम गो,
 जेलेपिते जयन्त कुमार ।
 भवप्रीता कहे सार, यम भय नहीं आर,
 नव युगे सब एकाकार हे हे ॥ धुन ।

(१०६) भूस्मर आलू चप पाला
 ॥ धुन ॥ महिमा तोर के कहे अलप, हे आलू के चप !
 महिमा तोर के कहे अलप ।
 राखले देवघरक परमपत हे आलू के चप !
 महिमा तोर के कहे अलप ॥
 तेरह सौ तेहत्तर साल, आलू चप करे कमाल,
 देवघरें सभिक मुहें तोरे, गप्
 हे आलू के चप ॥ धुन ॥
 पावडर छालीदार दही, दुइ टाका सेर कम नहीं,
 सवाद जैसन दवाय काया कल्प
 हे आलू के चप ॥ धुन ॥
 दोकानदार धन्वन्तरी चप अमृत तैयार करि,
 साभें लोकक देखीं भूपा भूप
 हे आलू के चप ॥ धुन ॥
 पाकी सेना सीमा पार, तैसन लोक के कतार
 चप लागी थाड़े करे तप
 हे आलू के चप ॥ धुन ॥
 भवप्रीता कहे माय काली ! जेकर भोजन रवड़ी छाली
 तेकर मुहें चप टपा टप टप
 हे आलू के चप ॥ धुन ॥

(१०८)

(११०) भूम्नर (आलू चप परिचय)

बाप तोहर आगिन बाबू, तेला महतारी

आलू के चप ।

हिंमनी बहिनी सुकुमारि हे आलू चप ॥

॥ धुन ॥ महिमा तोर के कहे अलप हे आलू के चप

लाल दुलहिन तोर मरचैया प्यारी

आलू के चप ।

बेटा तोहर मरीच मुरारी, हे आलू के चप ॥ धुन ॥

महिमा तोर के कहे अलप.....

गरम मशाला शाला, जिरिया तोर सारी

हे आलू के चप !

वेशनी पीताम्बर धारी हे आलू चप ॥ धुन ॥

चूड़ा संगे जलपान तोहें, बड़ी मजेदारी

हे आलू के चप ।

भात रोटि संगे तरकारी हे आलू के चप ॥ धुन ॥

परिवार पोषण तोहें नाम यश धारी

हे आलू के चप ।

भवप्रीताक गति त्रिपुरारि हे आलू चप ॥ धुन ॥

(१०९)

(१११) भूम्नर (भादुरिया)



॥ धुन ॥ पूछे राधा प्यारी ?

बिहुमी उत्तर देखीं बंशीधारी

(प्र०) राधा कौने चाहे भात गिल, कौने चाहे बिल ।

कौने चाहे, मिला श्याम ! कौने चाहे दिल

॥ धुन ॥

(उ०) कृष्ण—बूढ़े चाहे भात गिल, सोंपे चाहे बिल ।

बेपारीं चाहे मिल, प्रेमी चाहे दिल ॥ धुन ॥

(प्र०) राधा—केकर सरबस तील, केकर सरबस भील ?

केकर सरबस मन्दिल, केकर सरबस शील

॥ धुन ॥

(उ०) कृष्ण—पित्रीक सरबस तील, माछाक सरबस भील,

भक्तक सरबस मन्दिल, नारी सरबस शील

॥ धुन ॥

(प्र०) राधा—राधा कहे, कह बन्धु ! के जगें कुटिल ?

सबसे अधिक कहे केकरा जटिल ॥ धुन ॥

(उ०) कृष्ण—कृष्ण कहे तोर आँखी कटाक्ष कुटिल ।

अवप्रीता कहे वेदक अर्थ जे जटिल ।

(११०)

नेमान (नवान्न) वर्णन

(११२) भूम्बर

॥ धुन ॥ अघन सोहान,
खसी चढ़ी आवला नेमान ॥
अघन सोहान ॥

दहीक् छाली घौती चदर,
गोर देहें चौक सुन्दर,
गुड़क् टोपर कल्गी गुच्छा धान ॥ धुन ॥
तपोड़ा के ढाल धरी, मुरा के जे तरवारी
घंधरा के कुण्डल सोमे कान ॥ धुन ॥

पाकल कैराक् माठी मल, चूड़ाक् हार भलमल,
मेन्दा माला गला शोभामान ॥ धुन ॥
दाँड़ां सोमे गांथल बैंगन, कन्दा के खड़ाम् शोभन,
साकल माखल देहा भलकान ॥ धुन ॥

साजी आयला नेमान देवा,
बुढ़ैम जेकर वासी सेवा
भवप्रीता पूजे भगवान ॥ धुन ॥

(१११)

(११३) भूम्बर

केवल्य पाइते पंच ककार वर्जन

कुकर्म कुखाद्य काम कामिनी कांचन,
॥ धुन ॥ हरि हरि हरि, बोलो जय मधुसुदन ॥
कीर्त्तने कर्त्तन करे, पाश वैकर्त्तन
खकार चारिटि कबु ना होय आपन,
खर स्रोत स्विनी, खड्ग खेपा खल जन ॥ धुन ॥
गति पावे कर पंच गकार सेवन
गुरु गोविन्द गंगा गीता गोपालन ॥ धुन ॥
घकार त्रितय दूर यात्रा निवारण,
घट शून्य घड़ी शेश, घटा घोर घन ॥ धुन ॥
भवप्रीता कहे ड० कार त्रिभिषण
कुसंग भूजंग आर अनंग शासन ॥ धुन ॥

(११८) — DATE DUE
(भा.कु.सं. ११८) अनर्गुण (बंगला भाषा में)

॥ धुन ॥ आमार साराटि जीवन गेलो, भूतेर बेगारे ।

करितेनारिन् किछु निजेर उदारे ॥

पाँचटि भूतेर वासा वासाय

आर छय्‌टि सर्वनाशा ।

पुरावारे निज देर आशा, खाटाय आमारे ॥ धुन ॥

केह मांगे अन्न जल सुखमय वासस्थल

ताप वातास-शीतल, सुख संचारे ॥ धुन ॥

केह कामिनी कांचन, नापेले करे गर्जन

केह मांगे भोग परीजन, अहंविकारे ॥ धुन ॥

सदा एदेर सेवा करि,

भवप्रीता ना पाय हरि ।

एखन मांगे पद तरी

भव पाथारे ॥ धुन ॥

